तृतीय अध्याय

विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन

तृतीय अध्याय

''विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन''

प्रस्तावना -

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का मूल विषय है- ''संजीव की कहानियों में चित्रित दलित-जीवन का मूल्यांकन' इस विषय के अध्ययनक्रम में दलित वर्ग के जीवन से संबंधित जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है। दलित जीवन में स्थित रहन-सहन, शिक्षा-व्यवस्था, आर्थिक स्थिति, उनके व्यवसाय, व्यसनाधीनता, अंधविश्वास, जाति भेदाभेद, राजनीतिक स्थिति, संगठन एवं समूहभावना, लोककथा और लोकगीतों को जानना आवश्यक है।

नालंदा विशाल शब्दसागर में दलित शब्द का अर्थ इस प्रकार है- ''दलित - (वि.) (स.) (स्त्री-दलिता) - 1. मसला, रौंदा या कुचला हुआ, 2. नष्ट किया हुआ।''[1] इससे स्पष्ट है कि जिन्हें शोषित किया जाता है उन्हें दलित कहते हैं। डॉ. प्रभाकर मांडे कहते हैं- ''दलित या ऐसे व्यक्तियों का समूह जिनका मनुष्य के नाते जीने का हक छिन लिया है।''[2] यहाँ स्पष्ट है कि दलितों का जीवन पशू से भी बदतर रहता है।

भारतीय समाज व्यवस्था का शोषित, उपेक्षित अंग दलित समाज है। दलित एवं नारी को समाज में नगण्य स्थान है। सदियों से पीड़ित दलित उच्च वर्ण का दास बना रहा। पूँजीपति सवर्ण समाज दलितों का शोषण करते रहते हैं और दलित समाज नसीब का फेरा मानकर चुप बैठते हैं। समाज तथा साहित्य का परस्पर संबंध होने के कारण साहित्य में दलित, निम्नवर्ग, किसान, मजदूर, विधवा परित्यक्त्या नारी को स्थान प्राप्त हुआ है। डॉ. सुदेश बत्रा कहते हैं- ''प्रेमचंद पहले ऐसे साहित्यकार थे जिन्होने राष्ट्रव्यापी जनचेतना और शोषित वर्ग की वास्तविक स्थिति को प्रकट किया।''[3] यहाँ स्पष्ट है कि दलितों को सर्व प्रथम प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में

---

1. आदिशकुमार जैन - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 568
2. डॉ. बलवंत साधु जाधव - प्रेमचंद के साहित्य में दलित चेतना, पृष्ठ - 23
3. डॉ. सुदेश बत्रा - हिंदी उपन्यास बदलते परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ - 8

प्रस्तुत किया। दलित, सर्वहारा तथा निम्न वर्ग का शोषण सवर्ण समाज छल-बल तथा धन के जोर पर करता है। इसी पर प्रेमचंद जी ने प्रकाश डाला और सर्वहारा दलितों को न्याय देने का प्रयत्न किया। दलित साहित्य में दलितों, उपेक्षितों एवं सर्वहारा लोगों के खान-पान, रहन-सहन, उनकी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का चित्रण प्राप्त होता है। दलित जीवन की यथार्थता को दलित साहित्यकारों ने अपने साहित्य में स्थान देकर उनकी व्यथा को प्रस्तुत किया है। डॉ. नगमा जावेद लिखती हैं- ''दलित साहित्य में शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, दलित-जीवन का आक्रोश, आत्माओं का क्रंदन व्यथा एवं वेदना है।''[1] इससे स्पष्ट है कि दलित जीवन की व्यथा लिखनेवाला साहित्यकार आत्मानुभवी होगा। गैर दलित साहित्यकार सहानुभूति पर लिखता है। साहित्य सिर्फ काल्पनिक धरातल पर निर्माण नहीं होता बल्कि उसकी नींव समाज जीवन से होती है। दलित साहित्यकारों में प्रेमचंद, भैरवप्रसाद गुप्त, विवेकी राय, मुक्तिबोध, फणीश्वरनाथ रेणू, उपेंद्रनाथ अश्क, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जगदीशचंद्र, सुशिला टाकभोरे, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिश्यराय, रांगेय राघव, रामधारीसिंह दिनकर आदि कई साहित्यकारों ने दलितों की व्यथा को समाज के सामने प्रस्तुत किया।

संजीव जी एक ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने अछूते विषयों का उद्घाटन अपने साहित्य में किया। लंबी कहानियों के निर्माणकर्ता संजीव ने आदिवासी मजदूर, सपेरे, अपराधी, चोर, डाकु, पुलिस, निम्न वर्ग, दलित, पूँजीपति सवर्ण के द्वारा होते शोषण पर प्रकाश डाला है। संजीव ने अनुभव की पीड़ा से लिखी कहानियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। इनकी सफलता कहानियों के पढ़ने के बाद स्पष्ट होती है। डॉ .बदरी प्रसाद कहते हैं- 'वही साहित्य सफल है, जो शोषित मानवों की पीड़ा, वेदना तथा उनके प्रति किए गए शोषण और अन्याय का पर्दाफाश कर सकें, मेहनतकश मजदूरों की आवाज बुलंद कर सकें।' इससे स्पष्ट है कि साहित्य भी यथार्थता को स्पष्ट करना चाहता है। संजीव की कहानियों में इन सबका चित्रण प्राप्त होता है। साथ-ही-साथ बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यसनाधीनता, अशिक्षा, जातिभेद, छुआछूत, अंधविश्वास, लोककथा तथा लोकगीतों के भी दर्शन दिखाई देते हैं। जो दलित जीवन की यथार्थता को स्पष्ट करता है।

---

1. संपा. रतनकुमार पांडेय - अनभै, वर्ष- 1, अंक-3, जुलाई-सितंबर, 2004, पृष्ठ - 74

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में 'विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत दलित-जीवन' पर हम प्रकाश डालेंगे। इनकी कहानियों में दलितों का रहन-सहन, खान-पान, व्यसनाधीनता, शिक्षा-व्यवस्था, व्यवसाय, आर्थिक-स्थिति, अंधविश्वास, जाति भेदाभेद, राजनीतिक स्थिति, संगठन एवं समूहभावना तथा लोककथा लोकगीतों का लेखा-जोखा यहाँ पर प्रस्तुत है -

3.1 रहन-सहन और निवास-व्यवस्था -

पुराने जमाने से हमारे समाज में चार वर्ण माने गए हैं। ब्राह्मण- पूजा-पाठ करनेवाला, क्षत्रिय- देश की रक्षा करनेवाला, वैश्य- व्यापार करनेवाला तथा शूद्र- सवर्ण समाज की सेवा करनेवाला यही परंपरागत रूढ़ि थी। दलितों की बस्ती समाज से बाहर थी और देहातों में आज भी है। देहातों में रहनेवाला दलित अर्थाभाव एवं शोषण से पीड़ित है। देहातों में मिलनेवाली वस्तु का उपयोग करके अपना जीवन व्यतीत करता है। डॉ. तेजसिंह लिखते हैं- ''अगर संपन्न सवर्ण ऊँचे-ऊँचे, बड़े-बड़े पक्के मकानों में रहते हैं, तो गरीब दलित मिट्टी की दीवारों पर घास-फूस डालकर छप्परों में रहते हैं। यही भारतीय ग्रामीण समाज की वास्तविक सच्चाई है।''[1] इससे स्पष्ट है कि दलित गर्मी हो, ठंड हो या बरसात; उसे झुग्गी-झोपड़ी में ही रहना पड़ता है। संजीव की कहानियों में रहन-सहन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

'धनुष टंकार' कहानी में कारखाने के मजदूर जहाँ रहते हैं, वह मुहल्ला अत्यंत हीन दर्जे का है। चारों तरफ गंदगी का आलम है, बजबजाती नाली, भनभनाते मच्छर, मक्खियाँ, कचरे का ढेर, बच्चों के मल और गड्ढ़ों की गंदगी में मूँह मारते, घों-घों करते, कनई लपेटे, सुअरों का दल दिखाई देता है। जुएँ के अड्डे मुहल्ले में रहने से गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़ा, छिना-छपटी आदि दयनीय अवस्था चित्रित हुई है। 'मरोड़' के मास्टरजी का घर मतलब उखड़े पलस्तर की दीवारें तथा टूटा हुआ फर्श नजर आता है। घर में भी पिचके हुए ॲल्यूमिनियम के बर्तन तथा जंग खायी हुई, पेंदे बदलायी गयी बाल्टियाँ हैं। 'भूखे रीछ' कहानी में मास्टर का घर नोनछा, सीलन और बदबू फैली हुई है, दीवारें भी चटखी हुई हैं तथा घर में टूटे हॅण्डलवालें कप दिखाई देते हैं। 'बाग़ी' तथा 'लांगसाइट' कहानी में एक ही कमरे में पूरा परिवार रहता है। 'लांगसाइट' के हराधन

---

1. संपा. कुसूम चतुर्वेदी - नया मानदंड, अंक - 14, वर्ष - 7, अक्तूबर-दिसंबर, 1999, पृष्ठ 56

दा का कमरा मतलब ऐस बेस्टस की दीवारें तथा सड़े-गले टिनों की छाजन है। हराधन दा की बाड़ी में सामूहिक नाली के कारण हर घर के आंगन से नाली बहती है, जिससे बाड़ी के लोगों में झगड़ा होता है। प्रातःविधि के लिए जगह न होने के कारण नाली में ही निबटान के लिए बैठते हैं। 'नेता' कहानी में मजदूरों का क्वार्टर इतना छोटा है कि दो-तीन से ज्यादा आदमी कमरे में नहीं समा सकते। 'गो-लोक' कहानी में बस्ती की एक ओर नाला है और दूसरी तरफ घिनहू सेठ की गो-शाला है। गो-शाला के गोबरों से चारों ओर गंदगी है। नाले का जल भी चारों तरफ फैला हुआ है, जिससे बस्ती में दलदली, बिखराव, झाड़-झखाड़ नजर आता है। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में हबीब मियाँ की बस्ती रेल कॉलोनी के पास है। कूड़े-कचरे के घर में रहनेवाले लोगों की बस्ती में रेल कॉलोनी का सारा गंदा पानी बहता रहता है, जिससे छोटे-छोटे गड्ढ़े बने हुए हैं, जो भर जाने से सड़ांध की बू चारों तरफ फैलती है। 'मक्तल' कहानी में संतू दा जिस गली में रहते हैं वहाँ की खुली बजबजाती नालियों की बू से नाक फटी जाती है। 'सीपियों का खुलना' कहानी में वेश्याओं की बस्ती इस प्रकार है- ''गलीज कचड़े और मसले फूल, मरे पड़े फतिंगे, उनके पर और ऐसी तमाम वाहियात चीजें थी, जो ऐसी जगह पर हो सकती थी।''[1] इससे स्पष्ट है कि वेश्याओं कि बस्ती में मसले हुए फूलों का कचरा एवं मरे पड़े फतिंगे तथा उनके पर दिखाई देते हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में दलितों के घर जमीन में धँसे, खपरैल और छप्पर के नजर आते हैं तथा कुपोषण के कारण वहाँ के लोग भी मरियल से हैं। 'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासियों का घर मतलब खपरैल और फूस की ध्वस्त प्राय कच्चा बौना दड़बा है। यहाँ स्पष्ट है कि दलितों की बस्ती, मुहल्ला, बाड़ी, घर के पास गंदगी, कूड़े-कचरे का ढेर दिखाई देता है। वे कीचड़-बदबू, अंधेरा तथा झुग्गी-झोपड़ी में अपना जीवन गुजारते हैं।

दलितों की आर्थिक परिस्थिति दयनीय रहने से उन्हें पहनने के लिए एक ही जोड़ी कपड़ा रहता है और वह भी फटा हुआ। 'मुर्दगाह' में 'मैं' के अब्बा तकियादार है, इसीलिए मैयत की चादरें उन्हें प्राप्त होती हैं। उन्हीं मैयत की चादरों से सिले हुए कपड़े 'मैं' का परिवार पहनता है। 'चाकरी' कहानी में 'मैं' का परिवार दूसरों के उतारे हुए कपड़े पहनते हुए चित्रित हुए हैं। 'आप यहाँ

1. संजीव - भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ - 116

हैं' कहानी में आदिवासी लोगों के बच्चे नंगे-धड़ंग घूमते हैं, तो 'मक्तल' कहानी में संतु दा और उनके अन्य साथी उतरनवाले भड़कीले कपड़े खरीदकर पहनते हैं। 'धुआँता आदमी' में आदिवासी लड़की के पास एक ही जोड़ी कपड़े हैं, जिसे वह रात को धोकर, सुखाकर सुबह पहनती है। यहाँ स्पष्ट है कि आर्थिक अभाव के कारण इन शोषितों को पहनने के लिए एक ही जोड़ी कपड़ा रहता है। दूसरों की उतरन पहनना यही उनके जीवन का अंग नजर आता है। गंदगी में रहनेवाले दलित अपनी चारों ओर साफ-सुथरापन नहीं रखते जिससे गंदगी तथा बदबू फैलती है। जिसके कारण तरह-तरह की बीमारी फैलती है। 'टीस' कहानी के शिबू काका की झोपड़ी बाहर से अकिंचन और अनगढ़ दिखती है, परंतु अंदर से साफ-सुधरी है। रंग-बेरंगी मिट्टी से रंगकर छोटे-छोटे चित्र चिपकाकर झोपड़ी को खुबसुरत बनाया हुआ चित्रित हुआ है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य कहानियों में रहन-सहन परंपरागत है। वातावरण के अनुसार कथावस्तु में लोगों का रहन-सहन प्राप्त होता है। कथाकार ने मुहल्ला, बस्ती, बाड़ी के साथ-साथ वेश्याओं की बस्ती का वर्णन बड़ी यथार्थता से चित्रित किया है। दलितों का रहन-सहन कथावस्तु से मेल खाता हुआ दृष्टिगोचर हुआ है। दलितों का घर, उनका पहनावा और खान-पान पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है।

3.2 खान-पान -

आर्थिक अभाव के कारण दलितों को दो वक्त खाना कभी-कभी मिलता है। मजदूर, किसान, श्रमिक आदि लोग जी-तोड़ मेहनत करते हैं, लेकिन पेटभर खाना प्राप्त नहीं होता। आर्थिक स्थिति से दुर्बल दलित दाने-दाने के लिए तरसते नजर आते हैं। डॉ. नगमा जावेद इस बारे में कहती हैं- ''दलित वर्ग समाज का वह वर्ग है जिसने हमेशा शोषण को सहा है। सवर्ण समाज की जूतियाँ खायी हैं। उनका गू-मूत बटोरा है, उनकी सेवा-टहल की है और बदले में उसे दो जून रोटी भी नसीब नहीं हुई है, उस वर्ग के बच्चों ने दूध पीकर खिलौने से खेलकर बचपन नहीं गुजारा, बल्कि बची-खुची बासी, सुखी रोटी पानी के साथ हलक में उतारी है। जिंदगी की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित इस वर्ग में सदियों से जीवन को जिया नहीं बल्कि ढोया है।''[1] इससे

1. संपा. रतनकुमार पांडेय - अनभै, वर्ष - 1, अंक - 3, जुलाई-सितंबर, 2004, पृष्ठ - 73

स्पष्ट है कि दलितों को साग-सब्जी आदि प्राप्त नहीं होती। पानी पीकर, माड़-भात खाकर तो कभी गोबरहा खाकर जीवन गुजारनेवाले दलितों का चित्रण संजीव ने विवेच्य कहानियों में सार्थकता से अंकित किया है।

'धनुष टंकार', 'प्याज के छिलके' और 'महामारी' कहानी में दलित मजदूर तथा निम्न वर्ग के लोग बासी रोटी, प्याज, सत्तू या भात खिचड़ी, मकई अथवा चूनी की रोटी, नमक, दाल आदि जो प्राप्त हो उसे खाते हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में जगेसर महुआ, कोदो, चोकर (भूसी) की रोटी और माड़ भात खाकर बड़ा होता है। शहर में काम-धंदे के लिए जगेसर अपनी बीवी के साथ जाता है तो वहाँ भी उसे माड़ पीकर जीवन गुजारना पड़ता है। डॉ. राहुल दंडद्वीप के कुपोषित लोगों को देखकर कहते हैं- "जिन्हें कायदे का भोजन तक मयस्सर नहीं।"[1] यहाँ स्पष्ट है कि दलितों को जी-तोड़ मेहनत करने पर भी मजदूरी कम मिलती है। जिसके कारण दलितों को एक वक्त भी पेटभर खाना नहीं मिलता। जिससे दलित कुपोषित रहते हैं। इनके परिवार में एक व्यक्ति आ जाने से इन्हें खाने-पीने की चिंता सताती है। जगेसर का ब्याह होने पर बहू घर में आने से चलित्तर तथा जगेसर इन दो बाप-बेटों में झगड़ा शुरू होता है। जगेसर नौकरी के लिए शहर जाना चाहता है, तब चलित्तर बहू को भी साथ ले जाने की सूचना करता है। दोनों बाप-बेटे का झगड़ा मिटाने के लिए मुखिया आता है, तब चलित्तर मुखिया से कहता है- 'जितनी मजूरी आप देते हैं, उसमें हम दोनों क्या खाये और क्या खिलायें इसकी कनिया को ?' इससे स्पष्ट है कि आर्थिक अभाव के कारण इन्हें बड़ी मुश्किल से खाना प्राप्त होता है। 'जसी बहू' कहानी की जसी बहू को मकई के भूजे, सत्तू के घोल या पानी पीकर रहना पड़ता है। 'भूखे रीछ' के रामलाल को यह दुःख है कि वह अपने बेटे को छँटाकभर दूध भी लाकर नहीं दे सकता। 'चाकरी' कहानी में 'मैं' का परिवार गोबरहा की रोटी खाते हैं। 'लांगसाइट' कहानी में हराधन दा के बाड़ी के लोग सड़ी मछली का झोल तथा भात खाते नजर आते हैं। 'मुर्दगाह' कहानी में इदरीस न बिकनेवाले बासी पकोड़े अपने बेटे गुलामनबी को खिलाता रहता है, जिसके कारण गुलामनबी की मौत होती है। 'टीस' के शिबूकाका तथा उनकी पत्नी मताई खाने को कुछ न मिलने पर साँप भूनकर खाते हैं।

1. संजीव - प्रेतमुक्ति, पृष्ठ - 23

'आप यहाँ हैं' कहानी में आदिवासी लोग जो कंद खाते हैं वह मि. वर्मा को बदजायका लगता है। यहाँ स्पष्ट है कि आर्थिकता के कारण दो वक्त का भोजन कभी-कभार मिलता है। गोबरहा, चूनी की, भूसी की, मकई की रोटी, दूसरों के घर से प्राप्त झूठन तथा बासी एवं कुपोषित अन्न ग्रहण करना यही दलितों का जीवन है। कुपोषित एवं बासी खाना खाने से दलितों का स्वास्थ्य मरियल एवं कुपोषित है। जी-तोड़ मेहनत, अधपेट खाना जिससे दलितों को अनेक बीमारियाँ घिरे रहती हैं। जैसे- 'पिशाच' का उमाकांत टी. बी. से मरता है। 'मुर्दगाह' कहानी का गुलामनबी बासी पकोड़े खा-खाकर मरता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि दलितों को आर्थिकता के कारण पेटभर खाना नहीं मिलता। बासी, झूठन खाकर अपना जीवन गुजारनेवाले दलित कभी-कभी पानी पीकर भी अपना दिन व्यतीत करते हैं। चूनी, भूसी, गोबरहा की रोटी, भात तथा रूखा-सुखा कुपोषित अन्न ग्रहण करके मरियल से दिखनेवाले दलित हाड़तोड़ मेहनत करते हुए संजीव की कहानियों में प्राप्त होते हैं।

3.3 व्यसनाधीनता -

समाज के हर वर्ग के लोग व्यसन के अधीन हुए हैं। उच्च वर्ग व्यसन करके भी सुशिक्षित कहलाते हैं तो दलित निम्न वर्ग अशिक्षित कहलाता है। दलित लोग शराब पीकर सारे समाज में दंगा-फसाद करते हैं। जुआँ खेलना, सिगारेट पीना, खैनी, पान खाना आदि प्रकार के व्यसन लोगों में प्राप्त होते हैं। समाज में अधिक तर शराब का व्यसन ज्यादा दिखाई देता है। दुःख कम करने के लिए, मेहमानों का स्वागत करने के लिए शराब को ही महत्त्व देते हैं। शर्त लगवाकर तथा एक-दूसरे को जबरदस्ती शराब पिलाने से समाज में व्यसनाधीनता बढ़ती रहती है। संजीव की विवेच्य कहानियों में व्यसनाधीनता का चित्रण मिलता है।

'धनुष टंकार' कहानी में कारखाने के मजदूर ताड़ी-माड़ी पीकर लड़ते-झगड़ते हैं। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में चैत आते ही सारा गाँव नशे के अधीन रहता है। नशापान के कारण लड़ाई-झगड़ा तथा गालियाँ सारे गाँव में सुनाई देती हैं। 'जब नशा फटता है' कहानी में मेहतर समाज के लोग मैला ढोने का काम करते हैं। मैले के बदबू से दिमाग की नस तड़क न जाय इसीलिए शराब पीने के वे आदि रहते हैं। सैफ्टी टैंक साफ करते वक्त दो बोतल शराब पीने से नशा

टूट सकता है इसलिए चार-चार बोतल शराब पीते हुए चित्रित हुए हैं। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी के हबीब मियाँ दुःख-दर्द कम करने के लिए शराब पीते हैं। 'मक्तल' कहानी का चपरासी महेश शराब पीकर अपनी जान गवा बैठता है। यहाँ स्पष्ट है कि लोगों को शराब पीने की आदत के कारण वे समाज में लड़ाई-झगड़ा करते हैं। गाली-गलौज आदि से समाज का वातावरण दूषित करते हैं और बच्चों पर बुरा संस्कार डालते हैं। 'पिशाच' कहानी का 'मैं' जब सिगारेट पीता है तब छोटकऊ तथा बड़कऊ ये दोनों बच्चें सिगारेट पीते हैं और नाक तथा मुँह से धुआँ उगालते हैं। महातम बाबा को खैनी खाने की आदत है। 'टीस' के शिबूकाका बीड़ी का मसाला खैनी की तरह मलकर शाल के पत्ते में लपेटते हैं और बीड़ी का आकार देकर आधी बीड़ी खुद पीते हैं और आधी बीड़ी अपनी पत्नी मतई को देते हैं। 'भूमिका' कहानी के 'मैं' को जर्देदार पान, शराब और गरम मसाले की सड़ी हुई बू से अपना ही मुँह नाबदान की तरह गंधाता लगता है। 'धनुष टंकार' कहानी का गुंड तिवारी शराब के नशे में धुत्त लड़खड़ाता है और लोगों को परेशान करता है। यहाँ स्पष्ट है कि नशे में धुत्त ये लोग समाज का संतुलन बिगाड़ते हैं। 'प्याज के छिलके' तथा 'प्रेतमुक्ति' कहानी में मुंशीजी तथा मुखियाजी मेहमानों का स्वागत करने के लिए देशी महुए से लेकर व्हिस्की तक लाते हैं। लेखक लिखते हैं- 'कितने ही बोतलों के कार्क खुलते हैं।' इससे स्पष्ट है व्यसनाधीनता किसी भी कारणवश करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि व्यसनाधीनता दलितों में ही नहीं सवर्ण लोगों में भी प्राप्त होती है। दुःख दर्द कम करने के लिए, मेहमानों का स्वागत तथा आदतवश नशे के अधीन लोग दिखाई देते हैं। नशे के कारण बच्चों पर भी कुसंस्कार दिखाई देता है। समाज में लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौज आदि के कारण समाज व्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है। संजीव जी ने विवेच्य कहानियों में इसे सार्थकता से उद्घाटित किया है।

3.4 शिक्षा व्यवस्था -

पुराने जमाने में ज्ञान प्राप्त करना यह सिर्फ ब्राह्मणों का हक था। शूद्रों का पढ़ना-लिखना मतलब हिंदू धर्म भ्रष्ट हो जाना। छुआ-छूत के कारण भी दलित शिक्षा व्यवस्था से दूर रहा। धीरे-धीरे इसमें परिवर्तन हुआ, दलितों को शिक्षा का महत्त्व समझने लगा। भारत सरकार ने

भी देश को प्रगतिशील बनाने हेतु शिक्षा-प्रसार पर बल दिया। दलित अर्थाभाव के कारण भी स्कूल न गया। अशिक्षित रहने से वह दुनियादारी से बेखबर रहता है। संजीव ने विवेच्य कहानियों में शिक्षा-व्यवस्था पर प्रकाश डाला है।

पुराने जमाने में दलित निम्न वर्ग को पाठशाला के बाहर बिठाया जाता था। लेकिन 'बाग़ी' कहानी के 'मैं' को मास्टरजी स्कूल में सबसे पिछले बेंच पर बिठाते हैं। 'पिशाच' तथा 'प्रेतमुक्ति' कहानी में उमाकांत, रमाकांत और जगेसर को अनपढ़ होने के कारण नौकरी की चिंता सताती है। अगर वह पढ़े-लिखे होते तो उन्हें परिवार का खर्चा उठाने के लिए नौकरी मिल जाती। 'पिशाच' कहानी के उमाकांत तथा रमाकांत अपने पिता से कहते हैं- ''न पढ़ाए, न लिखाए कहाँ से कमाकर लाए कि घर में चूल्हा जले ?''[1] यहाँ स्पष्ट है कि अनपढ़ रहने के कारण नौकरी की चिंता है। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में चलित्तर अपने बेटे जगेसर को आर्थिक स्थिति के कारण पढ़ा-लिखा नहीं सकता। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में बस्तीवाले ध्वजारोहण करते हैं। तब प्रतिमा पूजन के लिए अमिताभ बच्चन तथा हेमामालिनी का फोटो लाते हैं। राष्ट्रगीत की जगह हिंदी फिल्मों के गीत उन्हें मालूम हैं। यहाँ स्पष्ट है कि पाठशाला न जाने के कारण दुनिया से बेखबर जान पड़ते हैं। राष्ट्रगीत तथा राष्ट्रपिता के बारे में यह लोग अन्जान हैं, जो अशिक्षा को स्पष्ट करता है। 'घर चलो दुलारीबाई' कहानी में अनपढ़ विधवा दुलारी ससुरालवालों के अत्याचारों से तंग अपने अधिकार के लिए अदालत जाती है। झूठे साक्ष्य एवं झूठे बयानों के आधार पर दुलारी को जीतेजी मृत घोषित करते हैं। तब लेखक कहते हैं- ''अनपढ़ देहाती औरत हो न, कैसे बूझ पाओगी अक्षरों की भाखा को।''[2] इससे स्पष्ट है कि देहातों में नारी को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाते थे। उन्हें सिर्फ चौका, बर्तन, चूल्हा यही तक इनकी सीमा थी। अनपढ़ दुलारी अगर पढ़ी-लिखी होती तो अन्याय के खिलाफ और अधिक सशक्त रूप से लड़ती दिखाई देती।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अशिक्षित रहने के कारण दलित परिवार की जिम्मेदारी उठाने में सक्षम नहीं रहता। अनपढ़ होने के कारण दुनिया से गाफील तथा अपने

---

1. संजीव - प्रेतमुक्ति, पृष्ठ - 23
2. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 10

अधिकारों के प्रति लड़ने में कमजोर दिखाई देते हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर दलितों को शिक्षित होना चाहिए। यहाँ पे संजीव ने शिक्षा-व्यवस्था का अंकन सार्थकता से किया हुआ है।

3.5 आर्थिक स्थिति एवं व्यवसाय -

प्राचीन काल से दलित तथा निम्न वर्ग उच्च वर्ग की सेवा करता आ रहा है। जी-तोड़ मेहनत करके भी दलित एवं निम्न वर्ग आर्थिक स्थिति से दयनीय रहा है। आर्थिकता विकास की नींव है, परंतु पूँजीपति समाज ने उसी नींव को जड़ से हिलाकर दलितों को कमजोर बनाया है। डॉ. सुरेंद्रनाथ तिवारी कहते हैं- ''आज के जीवन में अर्थ ही सामाजिक विषमता का मूल कारण है और अर्थ पर ही आधारित आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत नए वर्गों का प्रादुर्भाव भी हुआ है।''[1] इससे स्पष्ट है कि पूँजीपति वर्ग के कारण दलित अर्थ की चक्की में पीस रहा है। दलितों को भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित अधपेट खाना, कुपोषित जीवन, दवाइयों का अभाव यह सब आर्थिकता को स्पष्ट करता है।

'भूखे रीछ' कहानी का रामलाल कारखाने में मजदूर है। फिर भी बेटी को एक नया फ्राक या साड़ी नहीं ला सकता। बेटी की शादी के लिए पाँच हजार रुपए चाहिए तथा बच्चे को छँटाकभर दूध नहीं दे सकता। यहाँ स्पष्ट है कि कारखाने में आठों प्रहर काम करनेवाला मजदूर भी आर्थिक स्थिति से दयनीय है। 'चुनौती' कहानी में मिल मालिक मजदूरों को कम करके जपानी मशीनें कारखाने में लगवाकर, मजदूरों को आर्थिक स्थिति से कमजोर बना रहा है। मजदूरों को नौकरी जाने के कारण अपने परिवार की चिंता सताती नजर आती है। 'धनुष टंकार' कहानी के मजदूरों को कारखाने में कम मजदूरी देकर मजदूरों की आर्थिक दशा बदतर करते हैं। मिल मालिक, ठेकेदार आदि आराम-तलब बिना मेहनत-मजदूरी करके बड़े सुख-संपन्नता से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बंगले में रहना, नौकर-चाकर आदि सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण रहते हैं। सुरसती इस बारे में कहती है- ''घाटा हरामखोर अफसर, ठीकदार बाबू के चलते हैं जे बिना कौनो काम कइले पइसा ले जाओ है। हमनी तो जान दे के काम करोहियो।''[2] इससे स्पष्ट है कि उच्च वर्ग,

---

1. डॉ. सुरेंद्रनाथ तिवारी - प्रेमचंद और शरतचंद्र के उपन्यास : मनुष्य का बिंब, पृष्ठ - 29
2. संजीव - आप यहाँ है, पृष्ठ - 22

पूँजीपति समाज मजदूरों को कम मजदूरी देकर आर्थिक लाभ खुद उठाता है और अधिक संपन्न बनता है। मजदूरों को दलित एवं शोषित बनाता रहता है। 'फुटबॉल' कहानी के मैनेजर सोमनाथ कारखाने में नौकर भर्ती करने के लिए मजदूरों के पास से पंद्रह हजार की रिश्वत मांगता है। यहाँ स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति से दयनीय मजदूर अपने बेटों को कारखाने में नौकरी लगवाना चाहते हैं। लेकिन सोमनाथ मजदूरों को नौकरी का लालच देकर उनसे पैसे मांगता है। मजदूर भी कर्जा लेकर रिश्वत देने के लिए तैयार हैं, जो आर्थिक स्थिति से ग्रस्त दलितों की स्थिति स्पष्ट करता है। 'कठपुतली' कहानी में कल्याणी के पिता आर्थिक अभाव के कारण अपनी बेटी कल्याणी को दो हजार रुपयों में सेठ के हाथों बेचते हैं। 'पिशाच' में सुमन की माँ घर की परिस्थिति देखकर गाँव में मजदूरी के लिए जाती है। वहाँ भी मजदूरी न मिलने पर रात के वक्त रमेशर के पास जाती है। रमेशर कहता है- ''भौजी, अब इस देह को पीपल के गीधो के लिए छोड़ दो, भेजना है, तो सुमन को भेजो।''[1] इससे स्पष्ट है कि आर्थिक हालात देखकर मनुष्य गलत लाभ उठाता है। सुमन की माँ को भी इसी का शिकार होना पड़ता है। परिवार को एक वक्त की रोटी देने के लिए खुद के तन को बेचना पड़ता है। 'नौटंकी' कहानी की मैना अश्लिल नृत्य दिखाकर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयत्न करती है। यहाँ स्पष्ट है कि पूँजीपति लोग मजदूरों को मजदूरी कम देकर उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर बना रहे हैं। स्वयं पूँजीपति समाज मजदूरों का हक छिनकर सुख-सुविधापूर्ण रहता है। पैसों के बल पर औरतों को भी अपना गुलाम बनाता है। औरत भी अपना तन बेचकर आर्थिक अभाव को दूर करने का प्रयत्न करती है।

अतः स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति से दयनीय दलित बेटी को बेचता है, औरत अपना तन बेचती है, कर्जा लेकर रिश्वत देते हैं। मजदूर आठों प्रहर काम करके भी मजदूरी कम प्राप्त करते हैं और परिवार को भौतिक सुख-सुविधा नहीं दे पाते। संजीव की कहानियों में दलितों की आर्थिक स्थिति यथार्थपूर्ण अंकित हुई है।

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 22

व्यवसाय -

पहले जमाने में लोग वर्णानुसार व्यवसाय करते थे। ब्राह्मण- पूजा-पाठ, वैश्य- व्यापार, क्षत्रिय- देश की रक्षा तथा शूद्र- उच्च वर्ग की सेवा करता था। व्यवसाय से भी व्यक्ति को समाज में उच्च-नीच का स्थान दिया था। किसान, मजदूर, दलित आदि अपने परंपरागत व्यवसाय में दिखाई देते हैं। पढ़ा-लिखा दलित सिर्फ अच्छा ओहदा पाता है। संजीव के विवेच्य कहानियों में दलितों के व्यवसाय प्राप्त होते हैं।

'धनुष टंकार', 'भूखे रीछ', 'फुटबॉल', 'चुनौती', 'नेता' तथा 'गो-लोक' आदि कहानियों में मजदूर कारखानों में काम करते हैं और अपनी जगह पर अपने बच्चों को नौकरी पर लगाना चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर अच्छी नौकरी लगाने के बजाय वही परंपरागत मजदूरी में ढकेलते हैं। 'टीस' कहानी के शिबूकाका सपेरे हैं, जो साँप पकड़कर बेचना, साँप के खेल दिखाना आदि काम करते हैं। 'प्याज के छिलके' कहानी में कैलशिया की माँ दूसरों के खेतों में निराई-गोडाई, कटिया-दँवनी आदि काम करती है। हलवाहो, चरवाहो तथा मजदूर अपने पारंपारिक व्यवसाय करते दिखाई देते हैं। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' में तिरबेनी ताड़ी के झाड़ से ताड़ी उतारकर उसे बेचता है। तिरबेनी बहू ताड़ के पत्तों से पंखा बनाने का काम करती है। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' कहानी में हबीब मियाँ के बस्तीवाले चोरी करते हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में चलित्तर मुखिया के यहाँ मजदूरी करता है। चलित्तर का बेटा जगेसर नौकरी के लिए शहर जाता है। वहाँ जो काम मिले वह करता है, चूने, गारे, ईट, कोयले की दूलाई-लुदाई का काम करता है। वेश्या सत्तो रानी की रिक्शा भी चलाता दिखाई देता है। 'मरोड' कहानी के मास्टरजी नौकरी के साथ-साथ ट्यूशन भी पढ़ाते हैं। 'चाकरी' कहानी में 'मैं' का परिवार हलवाही करता है। सवर्ण 'मैं' का परिवार जातीच्यूत होने पर 'मैं' की माँ मेस में तो बाबूजी ठेकेदारी का काम करते हैं। 'मैं' अन्य बच्चों के साथ मिलकर बेलून, बादाम तथा अखबार बेचने से लेकर बूट पॉलिश करना और टैक्सियाँ पोछने का काम करता है। 'मैं' ग्रेज्युएट होने पर ट्यूशन पढ़ाना प्रारंभ करता है। 'तीस साल का सफरनामा' कहानी में सुरजा के गाँववाले परंपरागत व्यवसाय वर्णानुसार करते नजर आते हैं। 'जब नशा फटता है' में मेहतर समाज अपनी पीढ़ी-दर-पीढ़ी में चलनेवाला मैला ढोने का काम करते हैं। 'मुर्दगाह' कहानी में 'मैं' के नाना तकियादारी करते थे फिर 'मैं' के

अब्बा और अब 'मैं' तकियादारी करता है। यहाँ स्पष्ट है कि परंपरागत व्यवसाय 'मैं' का परिवार करता है।

यहाँ स्पष्ट है कि दलित लोग अपने परिवार का दायित्व निभाने के लिए परंपरागत व्यवसाय करते हैं। दलित वर्ग जो भी काम-धंदा प्राप्त हो उसे करते हैं। 'पिशाच', 'चाकरी', 'जसी बहू' तथा 'तीस साल का सफरनामा' आदि कहानियों में परंपरागत हलवाही, चरवाही तथा वर्णानुसार व्यवसाय करते हैं। 'भूमिका' कहानी में पैसों के लिए युवक गुंड़ों का काम करते हैं। 'किस्सा एक बीमा कंपनी एजेंसी का' कहानी में युवक बेरोजगारी से त्रस्त बीमा पॉलिसी का काम करते हैं। कारखाने के मजदूर अपना काम अपने बच्चे पर सौंपना चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि दलित परंपरागत रूढ़ि में अपना जीवन व्यतीत करता दिखाई देता है।

अतः स्पष्ट है कि दलित परंपरागत व्यवसाय के साथ-साथ जो भी काम मिले वह करते हैं। औरतें भी खेतों में निराई-गोड़ाई का काम करती हुई दिखाई देती हैं। मेहतर समाज मैला ढोने का परंपरागत व्यवसाय करता हुआ स्पष्ट होता है। 'प्याज के छिलके', 'तीस साल का सफरनामा' में वर्णानुसार हलवाहों एवं चरवाहों का काम करते हैं। यहाँ पर संजीव ने दलितों के व्यवसाय का सार्थकता से अंकन किया है।

3.6 अंधविश्वास -

भारतीय संस्कृति में धार्मिकता एक अहं भूमिका निभाती है, वह लोगों के भावुकता से जुड़ी है। विश्व मानवता के इतिहास का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि जिन व्यक्तियों का प्रकृति से जितना प्रत्यक्ष संबंध होता है अथवा जो अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं, उनका विधाता की परमसत्ता में अधिक विश्वास होता है। संजीव कि कहानियों में अंकित दलित पात्र ऐसे ही अंधविश्वासी नजर आते हैं, जिसका यहाँ पर हम विवेचन करेंगे।

'प्रेतमुक्ति' कहानी में जगेसर एवं बुधन सवेरे-सवेरे रंडी का मुँह देखना शुभ शकून मानते हैं। वह कहते हैं- ''सबेरे-सबेरे रंडी का मूँह देखने से मंगल-ही-मं
है कि मंगल-ही-मंगल होने के लिए रंडी का मूँह देखना शुभ शकुन मान

1. संजीव - प्रेतमुक्ति, पृष्ठ - 125

दफ्तर के लोग पारिवारिक शांति प्राप्त होने के लिए तांत्रिक राय के पास से एक पत्थर लाकर चाँदी की अँगूठी में धारण करते हैं। लाटरी की टिकट खरीदते वक्त भी इष्टदेवों का जाप करते हैं तथा भाग्यशाली अंक की टिकट खरीदते हैं। 'नेता' कहानी में दिग्विजय बाबू नीलम-पुखराज की अँगूठी पहनना शुभ मानते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि रंडी का मूँह देखना, अँगूठी में पत्थर धारण करना आदि बातें अंधविश्वास को स्पष्ट करती हैं।

मन्नत मांगना सदियों से चली आ रही परंपरा है। इसके पीछे लोगों की आम धरणा यह है कि कोई भी इच्छा पूरी करने के लिए भगवान को खुश करना जरूरी है। भगवान आपकी इच्छा पूरी करने पर आप भी भगवान को कुछ देकर खुश करते हैं। मन्नत माँगना यह मनुष्य के मानसिक आधार का एक पारंपारिक रूप है, इससे मनुष्य निराशा के गर्द साये से बचा रहता है। वह यह मानकर आशावादी रहता है कि, उसकी इच्छा पूरी होगी और उसी दृष्टि से काम करने लगता है। सवर्ण जाति ने दलित एवं निम्न वर्ग के लोगों की इसी मानसिक कमजोरी की नस पकड़कर उसे शोषण तथा उत्पन्न का नया जरिया बनाया और इसी तरह मानसिक आधार देनेवाली मन्नते कब अंधविश्वास का हिस्सा बनी पता भी न चला। बीमारी में, संतान प्राप्ति के लिए तथा जान बचाने के लिए भी मन्नते माँगते हुए संजीव की कहानियों में प्राप्त होते हैं।

'महामारी' कहानी में 'मैं' के भाई को माताराणी आने पर 'मैं' की माँ विंध्याचल देवी की मन्नत माँगती है। मन्नत पूरी करने के लिए 'मैं' का परिवार उपजाऊ टेढ़िया खेत बंधक रखता है। 'गो-लोक' तथा 'घर चलो दुलारीबाई' कहानी में संतान प्राप्ति के लिए मन्नत माँगते हुए दिखाई देते हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में चलित्तर अपने बेटे जगेसर का ब्याह हो जाए, इसीलिए सुअर का छौना देने की मन्नत माँगता है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में तिरबेनी ताड़ के झाड़ पर उलट जाता है तब उसकी जान बचाने के लिए तिरबेनी बहू देवी-देवताओं की मन्नतें माँगती हैं। गाँववाले भी तिरबेनी बहू को मनौति माँगने की सलाह देते नजर आते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि 'महामारी' में 'मैं' की माँ और 'तिरबेनी का तड़बन्ना' की तिरबेनी बहू आदि दलित एवं निम्न वर्ग के हैं। इन्हें एक वक्त का खाना बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है, परंतु परिवार की खुशहाली के लिए मन्नतें माँगते हैं।

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि संतान प्राप्ति, स्वास्थ्य के लिए, जीवन रक्षा के लिए मन्नत माँगते हैं। मन्नत पूरी करने के लिए जीवनभर की पूँजी लूटाते हैं, ताकि भगवान रूष्ट ना हो। यहाँ स्पष्ट है कि दलितों में अज्ञानता अधिक दिखाई देती है। मन्नते माँगकर मनुष्य अपनी मानसिकता को आधार बनाते हुए उसे एक अटूट अंधविश्वास में परिवर्तित किया है।

टोना-टोटका, भूत-प्रेतात्मा में विश्वास रखना यह भी अंधविश्वास की एक और कड़ी है। किसी का बूरा करने के लिए या अपने परिवार में खुशियाँ लाने के लिए टोना-टोटका करते हैं। भूत-प्रेतात्मा आदि सब ढकोसला है, जिस वातावरण में हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उस परिवेश के कारण हमारे आचार-विचार उसी में ढलते हैं। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में जगेसर के शरीर में भूत-प्रेतात्मा सवार होने पर आँखें अंगारे की तरह दहकती है तथा बैठे-बैठे झूमता है। डॉ. राहुल कहते हैं - ''ऐसे रोगी की चिकित्सा में परिवार, वंश, समाज, भ्रूण के साथ-साथ आर्थिक और स्वस्थ सामाजिक परिवेश भी अनिवार्य है।''[1] यहाँ स्पष्ट है कि परिवेश के कारण भूत-प्रेतात्मा आदि पर हमारा अधिक अंधविश्वास दृढ़ होता है। 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' में हबीब मियाँ के शरीर में महावीर का जिन्न आता है तथा रात के वक्त कभी-कभी महावीर मिलता भी है यह अंधविश्वास को अधिक पुष्टी देता है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में तिरबेनी ताड़ पर उलटता है। तब गाँववाले तिरबेनी को बचाने की बजाय वह मरकर तड़बन्ने का भूत बनेगा और पहचानवालों पर तुरंत सवार होगा यह गाँववालों का डर अंधविश्वास को उजागर करता है। यहाँ स्पष्ट है कि भूत-प्रेतात्मा आदि बातें ढकोसला है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित हुआ यह अंधविश्वास समाज में अब कम हो रहा है।

टोना-टोटका करना यह अंधविश्वास लोगों में नजर आता है। घर में बरकत आने के लिए, घर में किसी बुरी शक्ति का प्रवेश ना हो, संतान जीवित रहने के लिए तथा बीमारी में टोना-टोटका करते हैं। संजीव ने विवेच्य कहानियों में इस पर प्रकाश डाला है।

'महामारी' कहानी में 'मैं' के दादा टोना-टोटका बताते हैं। वे घर में बरकत आने के लिए बिल्ली की खेड़िया रखने का सुझाव रंगई बहू को देते हैं। 'अंतराल' कहानी में लहुरा

---

1. संजीव - प्रेतमुक्ति, पृष्ठ - 36

पट्‌टीवाली टोनही है और वह रामकुमार पर टोना-टोटका ना करें इसीलिए रामकुमार की माँ लोहबान सुलगाती है तथा गंडे-ताबीज बाँधती है। 'गो-लोक' में सेठ भोजराज की संतानें जीवित नहीं रहती। संतान जीवित रहे इसीलिए अलग-अलग टोने-टोटके अजमाता है। 'प्रेतमुक्ति' कहानी में दंड़द्वीप के लोग बीमारी में डॉक्टर के पास न जाकर वे ओझा के पास जाते हैं। ओझा भी मंत्र-तंत्र फूँककर टोना-टोटका करता है। इससे स्पष्ट है कि दवा के बदले दुआ एवं मंत्र-तंत्र पर विश्वास है। डॉक्टर के बदले ओझा, मांत्रिक के पास जाना इन्हें सुरक्षित लगता है।

अंधविश्वास की खाई में दलितों को उच्च वर्ग ढकेलता हुआ स्पष्ट होता है। ब्रह्म हत्या का भय दिखाकर दलितों की अज्ञानता का लाभ उठाते हैं। 'जसी बहू' कहानी में सितई पंडित जसी बहू की इज्जत लूटने की कोशिश करता है। जसीबहू चिल्ला-चिल्लाकर सारा गाँव इकटठा करती है तब प्रधान जसी बहू को ब्रह्म-हत्या का भय दिखाकर सितई पंडित को छूड़ाता है। 'पिशाच' कहानी में ब्राह्मण महातम बाबा गाँव के लोगों पर अत्याचार करता है। गाँववाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने पर महातम बाबा कुएँ में उल्टा लटक जाते हैं और गाँव के लोगों को ब्रह्म-हत्या का भय दिखाते हैं। महातम बाबा 'मैं' को अपने नतियवन को शहर ले जाकर नौकरी लगाने के लिए कहता है और इसके बदले वह ब्राह्मण है इसलिए आशीर्वाद देंगे। इससे स्पष्ट है कि उच्च वर्ग अपने स्वार्थ के लिए ब्रह्म हत्या, ब्रह्म आशीर्वाद आदि शब्द प्रयुक्त कर दलितों का गैर लाभ उठाते हैं। 'नौटंकी' कहानी में छोटे बच्चे मैना का अश्लिल नृत्य देखकर मन में पापबोध का अनुभव करते हैं। पंडित सुदर्शन के पास जाकर अनुष्ठान करते हैं और पाप मुक्ति हो गई ऐसा मानते हैं।

यहाँ स्पष्ट है कि दलित तथा निम्न वर्ग के साथ-साथ उच्च वर्ग तथा शिक्षित व्यक्तियों में भी अंधविश्वास दिखाई देता है। शुभ बातों को मानना, मन्नत माँगना, भूत-प्रेतात्मा, टोना-टोटका तथा ब्रह्म हत्या, ब्रह्म आशीर्वाद आदि बातों में अंधविश्वास दृष्टिगोचर होता है। अंधविश्वास के कारण आर्थिक नुकसान, मानसिक परेशानी होती है, साथ-ही-साथ ओझा, मांत्रिक आदि अपना लाभ उठाते हैं। जैसे- 'तिरबेनी का तड़बन्ना' में तिरबेनी बहू ललई पंडित को ताड़ को टोटका करने के लिए पैसे देकर सगुण पूछती है ताकि टोटका करने पर ताड़ी चुरानेवाला चोर पकड़ा जाए। इससे स्पष्ट है धार्मिक कार्य के लिए पैसा लेते हैं।

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि वैज्ञानिक विचारों का अभाव होने से लोग अंधविश्वास की डोर से बँधे रहते हैं। आधुनिक विचार प्रणाली अपनाकर लोगों को अंधविश्वासी बातों से दूर रहना चाहिए। अशिक्षितों के साथ-साथ सुशिक्षित समाज भी अंधविश्वास से घिरा हुआ दिखाई देता है। इस यंत्रयुग में मनुष्य को प्रगति की ओर बढ़ना चाहिए, अपने देश एवं समाज की प्रगतिशीलता के लिए अंधविश्वास से दूर रहना चाहिए। धार्मिक रूढ़ि, परंपरा, देवताओं के प्रति निष्ठता के कारण अंधविश्वास निर्माण होता है। बीमारी, मनोकामनापूर्ति, संतान प्राप्ति, भूत-प्रेतात्मा, टोना-टोटका तथा शुभ-अशुभ आदि बातें अंधश्रद्धाएँ मनुष्य की मानसिकता को स्पष्ट करती हैं। संजीव जी ने विवेच्य कहानियों में इसका यथार्थ अंकन किया है।

3.7 जाति भेदाभेद -

भारतीय समाज में वर्ण के अनुसार जाति-व्यवस्था का जन्म हुआ। सवर्ण समाज के पास धार्मिकता की लगाम रहने के कारण उन्होने दलित तथा निम्न वर्ग को गुलाम बनाकर छोड़ा। अंधविश्वास, रूढ़ि, परंपरा की आड़ में सवर्ण समाज ने दलितों की स्थिति पशु से भी बदतर बनायी। दलितों को मंदिर प्रवेश वर्ज्य, गाँव के बाहर बस्ती तथा उनके स्पर्श मात्र से वंचित रहने लगे। डॉ. चंद्रकुमार वरठे लिखते हैं- ''जाति-पाँति या वर्ण व्यवस्था को जन्म के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य मात्र की एक ही जाति है। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य उच्च-नीच होता है। अतः मनुष्य को अपने कर्म अच्छे बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।''[1] इससे स्पष्ट है कि जाति-व्यवस्था मनुष्य ने ही बनायी है और उसे ही तोड़नी होगी। आधुनिक युग में महानगरीय परिवेश में जाति भेदाभेद कम दिखाई देता है। देहातों में आज भी दलित तथा निम्न वर्ग की बस्ती गाँव के बाहर है। छुआ-छूत, समाज से बहिष्कृत करना तथा स्कूल में, नौकरी में एवं हिंदू-मुस्लिम में जाति भेदाभेद दिखाई देता है। संजीव ने विवेच्य कहानियों में जाति भेदाभेद को अंकित किया है।

3.7.1 समाज में जातिवाद -

दलित तथा निम्न वर्ग को समाज से दूर रखने के लिए तथा अपने स्वार्थ के लिए ब्राह्मण एवं पूँजीपति सामंतवादियों ने जातिवाद को बढ़ावा दिया तथा दलितों को नारकीय जीवन

---

1. डॉ. चंद्रकुमार वरठे - दलित साहित्य आंदोलन, पृष्ठ - 38

ढोने के लिए मजबूर किया। सवर्ण समाज ने अपने समाज के नियमों का उल्लंघन करने पर अपने ही जात-भाई को जातिच्यूत किया। ब्राह्मण वर्ग छुआ-छूत पर नहाना, पूजा-पाठ करना आदि परंपरा निभाते हैं। डॉ. नीलम सर्राफ कहती हैं- ''धार्मिक सांप्रदायिकता ही नहीं धार्मिक अंधविश्वासों द्वारा पोषित छुआ-छूत की समस्या हिंदू समाज में व्याप्त उस सामाजिक वैषम्य और भेदभाव की सूचक है जो धर्म के नाम पर उसका अनिवार्य अंग बनी हुई है।''[1] इससे स्पष्ट है कि छुआ-छूत के कारण समाज में भेदभाव एवं विषमता दिखाई देती है, जो धर्म के नाम पर समाज का कलंक है। संजीव जी ने समाज में स्थित जातिवाद पर प्रकाश डाला है।

'चाकरी' कहानी में सवर्ण समाज ने 'मैं' के परिवार को चमार की तरह हलवाही करता है, इसीलिए उन्हें जातिच्यूत करता है। लड़के भी 'मैं' को चमार-चमार तथा सुअर कहते हैं क्योंकि, सुअर मल खाता है और दलित गोबरहा खाते हैं। सवर्ण समाज 'मैं' के परिवार को बिरादरी से निकालकर तथा उन्हें चमार कहकर जाति भेदाभद को स्पष्ट करते हैं। 'घर चलो दुलारी बाई' कहानी में सवर्ण विधवा दुलारी पर मुश्ताक के साथ अवैध संबंध का झूठा इल्जाम लगाकर बिरादरी से बहिष्कृत करते हैं। 'भूखे रीछ' कहानी में रामलाल ने रजिया से ब्याह किया इसलिए बिरादरी एवं परिवार से संबंध टूट जाता है। यहाँ स्पष्ट है कि सवर्ण समाज अपने नियमों को कट्टरता से निभाता है। अन्य धर्म के लड़के से अवैध संबंध का झूठा इल्जाम भी वह सह नहीं सकतें। रामलाल असहाय रजिया से शादी करता है तथा 'मैं' का परिवार आर्थिक स्थिति से तंग हलवाही करते हैं, जिसे सवर्ण समाज नहीं मानता और वह जातिच्यूत करके अपना धर्म निभाता है। समाज में स्थित इस जातिवाद पर प्रकाश डाला है।

'बाग़ी' कहानी का 'मैं' एक होशियार लड़का है। लेकिन स्कूल में मास्टरजी उसे पिछले बेंच पर बिठाते हैं। डिप्टी साहब स्कूल का मुआयना करने आते हैं तब दलित 'मैं' को दूसरों के कपड़े पहनाकर पहली बेंच पर बिठाते हैं। डिप्टी साहब उत्तरों से संतुष्ट होकर चले जाने पर 'मैं' के पास से उधार के कपड़े उतरवाकर फिर से पिछले बेंच पर बिठाते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि शिक्षक अपनी पाठशाला का गौरव हो इसीलिए होशियार दलित 'मैं' को पहली बेंच पर बिठाते हैं।

---

1. डॉ. नीलम सर्राफ - संघर्षरत भारतीय जीवन की गौरवगाथा : इद न मम्, पृष्ठ - 72

शिक्षकों का स्वार्थ भाव स्पष्ट होता है तथा शिक्षकों द्वारा जातीयता मानना अन्याकारक है। 'दो बीघे जमीन' कहानी में रिटायर भगत की दो बीघे जमीन के लिए परिवार के साथ-साथ गाँव के उच्च वर्ग भी भगत का जीना हराम करते हैं। भगत को अपनी तरफ खींचकर उसकी जमीन हड़पने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। दूबे ब्राह्मण है और वह भगत का लोटा ऊठाकर उसे टटी-फराकत के लिए ले जाता है। भगत आनकानी करने पर दूबे कहता है - ''जात-पाँत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।''[1] इससे स्पष्ट है कि दूबे सिर्फ दो बीघे जमीन के लिए भगत का लोटा उठाता है। मन में स्वार्थ भाव होने के कारण दूबे का उपदेश अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है। दूबे के 'मुँह में राम और बगल में छूरी' की तरह यह उपदेश निरर्थक स्पष्ट होता है।

'गो-लोक' कहानी में घिनहू सेठ अपने कारखाने में मुस्लिम लोगों को नौकरी नहीं देता, जिसके कारण शफिक भी नौकरी से वंचित रहता है। शफिक घिनहू सेठ से कहता है- ''हमारी नसीब लेनी थी, तब छुत नहीं लगा था, हमी में छुत है ?''[2] इससे स्पष्ट है कि घिनहू सेठ छुआ-छूत करके जाति भेदाभेद को स्पष्ट करता है। बचपन में घिनहू सेठ जीवित रहे इसीत्तिए शफिक की माँ ने मुठ्ठी भर रूई में घिनहू सेठ को खरीदा था तब उन्हें छूत नहीं लगी, लेकिन अब वह जाति भेदाभेद को स्पष्ट करते दिखाई देते हैं। हिंदू-मुस्लिम विवाद तथा जातीय भेदाभद स्वातंत्र्य काल पूर्व से है। 'मुर्दगाह' कहानी मे 'मैं' के अब्बा तकियादार हैं। उन पर आरोप लगाया जाता है कि अब्बा के शह पर ही मनोहर चाचा लाशों की चोरी करते हैं। मौलवी साहब कहते हैं लाशों की चोरी मुसलमान नहीं कर सकता, जरूर किसी काफिर का हाथ है। मुस्लिम में सब बराबर है इसीलिए सारे मुसलमान एक हो जाए। हिंदूओं की समिति भी लाश चोरी का झूठा इल्जाम मिटाने के लिए सारे हिंदू एक हैं, हिंदूओं की हिफाजत करना उनका धर्म है आदि बातें कहते हैं। 'मैं' के अब्बा मनोहर चाचा से दोस्ती तोड़कर अपने धर्म के प्रति निष्ठा एवं हिंदू-मुस्लिम जातिभेद को स्पष्ट करते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि समाज में सवर्ण जातिभेद एवं हिंदू-मुस्लिम जातीय भेदाभेद से समाज में जातीय भेदाभेद को अधिक बढ़ावा मिलता है। यह लोग अपने-अपने धर्म के

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 26
2. वही, पृष्ठ - 66

प्रति एकनिष्ठ रहकर समाज की रूढ़ि परंपरा को बरकरार रखना चाहते हैं। पुरानी मान्यताओं को तिलांजली न देकर उन्हें और अधिक बढ़ावा देते हुए दिखाई देते हैं।

सवर्ण समाज आराम तलब जिंदगी जीने का आदि बना हुआ है। वह दलितों की तरह जी-तोड़ मेहनत तथा निम्न वर्ग की तरह हीन दर्जे का काम नहीं करता। निम्न वर्ग अगर अपना दैनंदिन कामकाज करने से मना करे तो सवर्ण समाज को बड़ी मुसीबत होती है। ब्राह्मण वर्ग हल जोतना भी हीन समझते हैं। 'तीस साल का सफरनामा' कहानी में सुरजा पर खीर चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर जमींदार का बेटा राघवेंद्र सुरजा को पीटता है। इस अन्याय के खिलाफ दलित तथा निम्न वर्ग आवाज उठाते हैं। हलवाहों, चरवाहों आदि लोग अपना-अपना काम बंद करते हैं, तब ब्राह्मणों एवं ठाकुरों को खेत में हल चलाना हीन लगता है। यहाँ स्पष्ट है कि वर्णानुसार अपना-अपना काम करना अनिवार्य है। परंपरागत रूढ़ियों को दिखाकर जाति भेदाभेद स्पष्ट करते हैं। पहले वर्णानुसार कामधंदा करते थे लेकिन इसमें परिवर्तन आ गया है। पुराने जमाने में छुआ-छूत पर नहाना, पूजा-पाठ करना अनिवार्य था। 'प्याज के छिलके' में मुंशीजी हरिजन कैलशिया को छूने पर अपना हाथ रगड़-रगड़कर धोते हैं। पूजा-पाठ करते हैं, हनुमान चालिसा पढ़ते हैं, लेकिन अब समाज में परिवर्तन के कारण उच्च-नीच भेदभाव कम हो रहा है। 'पिशाच' कहानी में महातम बाबा के लड़के छोटी जातिवालों को घर बुलाते हैं, खाट पर बिठाते हैं यह बात खटकती है। लड़के भी ब्राह्मण होकर रमेशर के यहाँ काम करते हैं। बाबूलाल दूबे ब्राह्मण होकर हल जोतता है आदि बातें परंपरा के विरूद्‌ध दिखाई देती हैं। पुराने रीति-रिवाज में पले-बढ़े महातम बाबा को उपर्युक्त बातें खलती हैं जो उच्च-नीच जाति भेदाभेद को स्पष्ट करती हैं। 'गो-लोक' कहानी में शफिक की बीवी सड़क पर प्रसुत होने पर बस्ती की सारी औरतें जच्चा-बच्चा दोनों को आड़ में लेते हैं। बस्ती की पंडिताइन से लेकर बरेठीन तक बिना किसी भेदभाव के बच्चा-जच्चा को उठाकर रिक्शा में रखते हैं। यह घटना आधुनिकता एवं मानवता धर्म को स्पष्ट करती दृष्टिगोचर होती है। लेखक यहाँ पर परिवर्तनशील समाज को प्रस्तुत करता है।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि लेखक ने दो पीढ़ियों का नजरीया प्रस्तुत किया है। पुराने जमाने में जातीयता किस तरह मौजूद थी और इस आधुनिक युग में मानवता को कितना

महत्त्व है यह स्पष्ट किया है। समाज पुराने रीति-रिवाजों को भूलकर, समाज में नया परिवर्तन ला रहा है। 'पिशाच' तथा 'गो-लोक' कहानी परिवर्तनशील समाज की साक्ष देता दिखाई देता है।

3.8 संगठन एवं समूहभावना -

समाजशास्त्र में संगठन एवं समूहभावना को अधिक महत्त्व दिया है। मिल-जुलकर रहने से हर संकट का सामना कर सकते हैं। समाज की उन्नती तथा उत्कर्ष संगठन के कारण होता है। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए तथा अपने अधिकारों की माँग के लिए समाज में एकता जरूरी है। समाज से दूर रहने पर मनुष्य को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। आंबेडकर जी का 'संगठित बनो और संघर्ष करो' कहना इसीलिए सार्थक लगता है। संजीव की विवेच्य कहानियों में संगठन एवं समूहभावना का चित्रण प्राप्त होता है।

'भूखे रीछ' कहानी में पार्शियल लॉक आऊट हो जाने पर कारखाने के मजदूर जुलूस निकालते हैं तथा मोर्चाबंदी करते हैं। मास्टरजी मजदूर भाइयों से यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि - ''काम पर जाएँगे तो सब, वरना कोई नहीं।''[1] इससे स्पष्ट है कि मजदूर भाई संगठन से अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं। मजदूर भाइयों में एकता के कारण वह समूहभाव से मैनेजमेंट को सबक सिखलाना चाहते हैं। काम पर कोई भी मजदूर अकेला न जाकर साथ-साथ जाना यह संगठन को स्पष्ट करता है। 'धनुष टंकार' कहानी में लूज शटिंग के धक्के से मजदूर झम्मन की कमर टेढ़ी होती है। कारखाने में काम न मिलने पर झम्मन की आर्थिक स्थिति दयनीय होती है। मजदूर लोग झम्मन के परिवार की हालत देखकर ठेकेदार से अनुनय-विनय करते हैं और झम्मन को स्टोर की पहरेदारी तथा झम्मन की पत्नी सुरसती को पिग आयरन की लोडिंग-अनलोडिंग का काम दिलवाते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि मजदूर भाइयों को झम्मन की आर्थिक स्थिति देखी नहीं जाती। सारे मजदूर भाई संगठित होकर ठेकेदार को मिन्नते करके झम्मन के परिवार को रोजी-रोटी देते हैं जो मजदूरों का समूहभाव दिखाई देता है। 'नेता' कहानी में फार्नेस की आग में झूलसकर एक मजदूर अपनी जान गवां बैठता है। कारखाने के अन्य मजदूर इस अत्याचार के खिलाफ संगठित रूप से आवाज उठाते हैं तथा अपने अधिकार के लिए हड़ताल करते हैं। इससे स्पष्ट है कि मजदूरों में सजगता के कारण

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 67

वह मैनेजमेंट के खिलाफ अपनी संगठित शक्ति को स्पष्ट करते हैं। 'फुटबॉल' कहानी के मैनेजर सोमनाथ कारखाने में नौकर भर्ती के लिए पंद्रह हजार की रिश्वत माँगते हैं। नौकरी भर्ती की तारीख भी एक साल से खिसका रहे हैं। भर्ती के लिए उत्सुक लड़के सोमनाथ का यह अन्याय सह नहीं पाते और सारे लड़के मिलकर मैनेजर सोमनाथ के ऑफिस पर हमला करते हैं। संगठित होकर लड़कों का इस तरह लड़ना समूहभाव को स्पष्ट करता है। यहाँ स्पष्ट है कि मजदूरों में एकता के कारण वह एक-दूसरे का सुख-दुःख समझ सकते हैं। अपने अधिकारों के लिए मजदूर तथा भर्ती के लिए उत्सुक लड़के समूहभाव से लड़ते दिखाई देते हैं।

'तीस साल का सफरनामा' कहानी में सुरजा पर खीर चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर नंबरदार का बेटा राघवेंद्र सुरजा को चाबूक से पीटता है। सुरजा पर किए गए अत्याचार के खिलाफ सारे दलित एक हो जाते हैं। हलवाहों, चरवाहों, चमाइन आदि निम्न वर्ग के लोग अपना-अपना काम धंदा बंद करके संगठित रूप से जुर्म के खिलाफ आवाज उठाते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि निम्न वर्ग के लोग अत्याचार के खिलाफ समूहभाव से लड़ते हैं। 'प्याज के छिलके' कहानी में हरिजन कैलशिया मुंशीजी के खेत से एक प्याज उखाड़ने पर, मुंशीजी हरिजन कैलशिया का झोटा पकड़कर उसे मारते हैं। हरिजन कैलशिया पर हुए अन्याय के खिलाफ सारे दलित संगठित होते हैं। वह समूह रूप से मुंशीजी के पास जाकर मुंशीजी को हरिजन कैलशिया की माफी माँगने के लिए कहते हैं। दलितों को इस प्रकार समूहभाव से मुंशीजी के पास जाकर जवाब-तलब करना संगठित शक्ति को स्पष्ट किया है। 'तिरबेनी का तड़बन्ना' कहानी में तिरबेनी ताड़ पर उलट जाता है। गाँववाले तिरबेनी की जान बचाने की बजाय बेफिजूल की बातें करते हैं। तिरबेनी की जान बचाने के लिए बाँस की जरूरत है और प्रधानिन और महटराइन अपने खेत से बाँस तोड़ने नहीं देती। तब तिरबेनी बहू सबको गालियाँ देकर बाँस तोड़ने के लिए खेत में दौड़ती है। तड़बन्ने के सारे लोग तिरबेनी बहू का ढाढ़स देखकर वे भी तिरबेनी बहू की सहायता करते हैं और तिरबेनी की जान बचाते हैं। इससे स्पष्ट है कि संगठित होने के लिए लोगों को प्रेरणा की आवश्यकता रहती है। 'ऑपरेशन जोनाकी' कहानी में जमींदार मजदूरों को मजदूरी कम देते हैं, वनविभागवाले आदिवासी लोगों को उनके परंपरागत जीने के अधिकारों से वंचित करते हैं। भूमिहीन लोग तथा आदिवासी अप्ने अधिकारों, भूमि, जंगल एवं मजदूरी के लिए सत्येन से प्रेरणा पाकर अपने ऊपर हुए अत्याचार के

खिलाफ आवाज उठाने के लिए समूहरूप से संगठित होते हैं। 'जब नशा फटता है' कहानी में मेहतर समाज के लोग जाति भेदाभेद तथा छुआ-छूत से तंग आकर संगठित होकर धर्मपरिवर्तन करते हैं। 'आप यहाँ हैं' कहानी में शिल्वा गाँव की आदिवासी महिला हिंदिया पर मि. वर्मा बलात्कार करता है। मिसेज वर्मा हिंदिया पर झूठे आरोप लगवाकर पुलिस केस दर्ज करवाती है तब हिंदिया भाग जाती है। मि. वर्मा एक बार अपने परिवार समेत शिल्वा गाँव के नजदीक जाते हैं। हिंदिया के परिवार का हाल-हवाला जानने के लिए शिल्वा गाँव जाने पर सारे आदिवासी संगठित होकर हाथ में मशाल लिए हिंदिया के नेतृत्व में मि. वर्मा पर हमला बोलते हैं। हिंदिया अपने ऊपर हुए अत्याचार तथा समाज के ऊपर होते अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। वह कहती है- ''आ गया यहाँ भी, कुत्ता का माफिक सूँघते-सूँघते। मालूम नहीं है आपको क्या कर सकता ई लोग।''[1] इससे स्पष्ट है कि आदिवासी लोग समूहभाव से हिंदिया पर हुए अन्याय एवं अत्याचार का बदला संगठित होकर लेना चाहते हैं। 'मुर्दगाह' कहानी में कब्रस्तान से लाशे चुराने का झूठा इल्जाम हिंदूओं पर मुस्लिम धर्म लगाता है। हिंदू धर्म समिति के लोग यह झूठा इल्जाम मिटाने के लिए संगठित होते हैं, तो मुस्लिम धर्म के लोग भी अपने धर्म की रक्षा करने के लिए मुस्लिमों को संगठित करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि समाज में संगठन को कितना महत्त्व दिया जाता है। मजदूर, हलवाहों, चरवाहों, आदिवासी तथा हिंदू मुस्लिम आदि लोग समाज में संगठित रूप से रहते हैं। अपने समाज के ऊपर होते अन्याय के खिलाफ समूहभाव से आवाज उठाते हैं। मजदूर भाई तो मोर्चा, जुलूस, हड़ताल करके अपनी संगठन शक्ति को स्पष्ट करते हैं, तो आदिवासी भाई मशाल लेकर 'हम एक हैं' को स्पष्ट करते हैं। तिरबेनी बहू और सत्येन सारे समाज को संगठित रहने की प्रेरणा देते हैं, जो युगप्रवर्तन है।

अतः कहना गलत नहीं होगा कि संगठन तथा समूहभावना के कारण जुल्म के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है। संगठन होने से समाज में एकता रहती है तथा अन्याय कम होने में सहायता मिलती है। कभी-कभी जाति के नाम पर संगठित होना यह सांप्रदायिकता को बढ़ावा देता है इस पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है।

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 72

3.9 राजनीतिक स्थिति -

भारत में स्वातंत्र्योत्तर काल से चुनाव शुरू हुए। स्वातंत्र्योत्तर काल में पहले देशसेवा के लिए नेता चुनाव लड़ते थे, लेकिन इन दो दशकों में सत्ता तथा धन के लिए चुनाव लड़ते हैं। सामान्य जनता को झूठे आश्वासन देना, सस्ताई का जाल बिछाना, कभी धर्म के नाम पर तो कभी जातीयता के नाम पर चुनाव लड़ना यही राजनीतिक स्थिति है। डॉ. सुमित्रा त्यागी के मतानुसार- "चालाक नेताओं ने भोली-भाली जनता को कल्याण का स्वप्न दिखाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि की।"[1] इससे स्पष्ट है कि सत्ता पाकर राजनीतिक नेता अपना स्वार्थ साधते हैं। सरकारी कामकाज के पैसे हथियाना, दलितों का हक छिनना, गुंड़ों द्वारा समाज में अशांति फैलाना तथा अपने रिश्तेदारों को ठेका परमिट देना आदि कार्य करके राजनीतिक नेता सफेदपोश दिखाई देते हैं। संजीव की कहानियों में राजनीतिक स्थिति का सही चित्रण प्राप्त हुआ है।

'प्याज के छिलके' कहानी में हरिजन कैलशिया तथा लंगड की हत्या का लाभ पक्ष-विपक्ष के नेता अपने स्वार्थ के लिए उठाते हैं। सत्तासीन दल तथा सत्ताविहीन दल एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करते हैं तथा एक-दूसरे की कमजोरी समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। हरिजन हत्या को न्याय नहीं दिया इसीलिए सरकार को सत्ता पर रहने का अधिकार नहीं है, ऐसा सत्ताविहीन दल कहता है, तो सत्ता दल बताता है, सत्ताविहीन दल ने अपनी सत्ता में हरिजनों के पैसे अपने लोगों में बाँटे, मजदूरों पर गोलियाँ चलायी, वोट न देनेवालों पर बहुत सारे अत्याचार किए तथा कोटा, परमिट और ठेका अपने मित्र-परिवार तथा गुंड़ों को दिए हैं। राजनीतिक नेता एक-दूसरे की कमजोरी तथा अवगुण समाज के सामने लाता है। यहाँ स्पष्ट है कि स्वपक्ष को सच्चा साबित करने की नाकाम कोशिश करना, अपने सत्ताकाल में भ्रष्टाचार करना, यह राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट करता है। 'नेता' कहानी में कारखाने में फार्नेस की आग में एक मजदूर झूलसकर मरता है, तब कारखाने के अन्य मजदूर इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं। कारखाने में मजदूरों द्वारा हड़ताल होने पर बाइसौ युनियनें अपनी-अपनी रोटी सेंकने के लिए आती हैं। नेताओं में भी एक-दूसरे की धोती खोलने की होड़ लगती है। मुख्यमंत्री भी झूठे

---

1. डॉ. सुमित्रा त्यागी - हिंदी उपन्यास, आधुनिक विचारधाराएँ, पृष्ठ - 163

आश्वासन देते हैं कि प्रमोशन की शर्तों के लिए प्रधानमंत्री तथा इस्पात मंत्री से बात करेंगे तब तक मजदूर अपने-आपने काम पर जाए। इससे स्पष्ट है कि मजदूरों को झूठे आश्वासन देकर उन्हें वापस काम पर भेजना तथा अपना स्वार्थ साधकर भ्रष्ट राजनीति को स्पष्ट करते हैं। नेता लोग खुद की सुरक्षा के लिए पुलिस को रात-दिन तैनात करते हैं और खुद आराम से सोते हैं। 'अपराध' कहानी में सिद्धार्थ के भाई एस्. पी. हैं, वे सात दिन से मंत्री की सुरक्षा में व्यस्त रहते हैं। एक रात सिर्फ घर में रहते हैं तभी पुलिस स्टेशन से फोन आता है कि किसी की हत्या हो गयी है, तब वे तुरंत ही ड्युटी पर रवाना होते हैं। सिद्धार्थ की भाभी कहती है- ''वे नेता तक किसी खरीदी हुई कनीज को चिपटाए नरम बिछौने पर सो रहे होंगे जिनके लिए साइडट्रैक करके उनकी सुरक्षा के लिए बैंड बजानेवालों की तरह गुलाम बनकर आगे-पीछे चलना पड़ा।''[1] यहाँ स्पष्ट है कि नेता लोग अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस को तंग करती है। सिद्धार्थ की भाभी ने स्वार्थी एवं भ्रष्ट नेताओं का पर्दाफाश किया है जो राजनीति के सहारे अपनी काली करतूतें स्पष्ट करते हैं। 'बाग़ी' कहानी में भी प्लांट के उद्घाटन के लिए आनेवाले हैं इसीलिए सारा माहौल साफ-सुथरा रखते हैं। जहाँ पे साँस लेना मुश्किल है वहीं पे चकाचौंध नजर आती है। मंत्रीजी भी प्लांट का उद्घाटन आम आदमी के हाथों करवाकर समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़वाना चाहते हैं तथा समाज के लोगों पर अपना प्रभाव डालते स्पष्ट होते हैं। 'चुतिया बना रहे हो' कहानी में प्रताप बहादूर सिंह मुख्यमंत्री पद सिंह जाति के पास रहे इसीलिए सिंहपुर में सभा लेते हैं। सभा में उदयभान सिंह को घर बैठने की तथा सुरजभान सिंह को चुनाव लड़ने की बात करते हैं। सभा में मनबोध सिंह जो एक आम नागरीक है वह कहता है किसी गैर जाति की सुख-सुविधा अपनी जाति में क्यूँ दी ? तो प्रताप बाहदूर के साथ-साथ अन्य लोग भी उसका अपमान करके तथा अज्ञानी कहकर चुप बिठाते हैं। इससे स्पष्ट है कि वोट की लालच में गैर जाति की सरकारी सुख-सुविधा अपने लोगों में बाँटते हैं। 'नरवानर' में शरणकुमार लिंबाले लिखते हैं - ''किसी भी जाति का नेता अपनी बिरादरी क्षेत्र और प्रदेश की सहानुभूति बटोरकर ज्यादा-से-ज्यादा वोट बटोरना चाहता है। पर वह अपने लोगों, क्षेत्र का इतना

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 18

विकास नहीं चाहता कि वे उसी से सवाल करने लगे।''[1] यहाँ स्पष्ट है कि राजनीतिक नेता सिर्फ कुर्सी के लिए तथा समाज की सहानुभूति पाकर वोट बटोरने के लिए अपने लोगों में मदद एवं अन्य सुख-सुविधा देता रहता है, जो स्वार्थी राजनीति को स्पष्ट करता है।

अतः कहना सही होगा कि स्वतंत्रतापूर्व काल में नेताओं में देशभक्ति अधिक थी। आजकल की राजनीति ढोंगियों का आखाड़ा है। नेताओं में स्वार्थी भाव, धन एवं सत्ता की लालसा अधिक दिखाई देती है। पुलिस के साथ नेताओं के आपसी गठबंधन के कारण अवैध धंदे बढ़ रहे हैं, उस पर भी कथाकार ने अँगुली निर्देश किया है। विवेच्य कहानियों में जिसका यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आज की राजनीति देशसेवा न होकर वह धन कनाना, अवैध धंदा छुपाना, स्वार्थ सिद्धि एवं सत्ता प्रस्थापित करने का माध्यम बनी हुई है। गुंड़ों द्वारा समाज में दहशत फैलाना, वोट के लिए दलितों पर बेतहाशा अत्याचार करना, गैर जाति की सुख-सुविधाएँ अपने समाज में बाँटना और सामान्य जनता को झूठे आश्वासन देना आदि भ्रष्ट राजनीति के विविध आयाम दृष्टिगोचर हुए हैं।

3.10 लोककथा -

समाज में लोककथाओं का एक अलग स्थान है। शिक्षित तथा अशिक्षित इन दोनों की भी लोककथा संपत्ति है। लोककथा के माध्यम से अच्छे-बूरे संदेश प्राप्त होते हैं, बच्चों को भी अच्छे संस्कार आत्मसात होते हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरीत होनेवाली ये लोककथाएँ मनुष्य में प्रेरणा उत्पन्न करती हैं। डॉ. इंद्रपाल सिंह ने 'साहित्यिक निबंध एक नवीन दृष्टि' में लोककथाओं के निम्नलिखित भेद किए हैं - ''देवी-देवता संबंधी कथा, सामाजिक कथा, जातिकथा, ऐतिहासिक कथा आदि भेद किए हैं।''[2] संजीव की कहानियों में लोककथाओं का चित्रण कम मात्रा में प्राप्त होता है।

---

1. संपा. गोपालराय : हरदयाल - समीक्षा, एप्रिल-जून, 2005, पृष्ठ - 12
2. डॉ. इंद्रपाल सिंह - साहित्यिक निबंध एक नवीन दृष्टि, पृष्ठ - 17

3.10.1 *'भूखे रीछ' की कथा* -

'भूखे रीछ' कहानी में पार्शियल लॉक-आऊट के कारण मजदूर जुलूस निकालते हैं, मोर्चाबंदी करते हैं, तब मास्टर को पकड़कर भाषण देने के लिए कहते हैं। मास्टर बताते हैं पार्शियल लॉक आऊट करके मिल मालिक मजदूरों को औजार बनाकर उन्हीं के भाइयों पर वार करवाते हैं। अपनी-अपनी नौकरी बचाने के लिए हम मजदूर आपस में छिना छपटी करते हैं। इस पर वह भूखे रीछ की कहानी सुनाते हैं।

उत्तर ध्रुव में साल के छः महिने बर्फ जमी रहती है। घसीटनेवाली गाड़ी वहाँ कुत्ते खींचते हैं। सैलानी परिवार इसी गाड़ी से सैर कर रहे थे, तभी सफेद रीछों ने उनकी गाड़ी का पीछा किया। परिवार के मालिक ने बंदूक से एक रीछ को मारा। सारे रीछ गाड़ी का पीछा करना छोड़कर अपने साथी को खाने में जुट गए। तब तक गाड़ी कुछ आगे निकल जाती है। रीछों ने अपने साथी को खाने के बाद फिर से गाड़ी का पीछा किया। फिर से गोली चली फिर से अपने साथी को खाने में लग गए। रीछों को सिर्फ माँस से मतलब था, किसी का भी हो, क्योंकि वे भूखे थे और चेतनाशून्य। हम सब भी भूखे रीछ हैं, दौड़ रहे हैं भूख से निजात पाने के लिए शोषण की गाड़ी के पीछे। अगर व्यवस्था एक को भूनती है तो हम सब कुछ भूलकर उसी को खा जाने के लिए टूट पड़ते हैं। हम भूल जाते हैं कि निशाणा हमारा गाड़ी है। इससे स्पष्ट है कि कथानक के लिए लोककथा किस प्रकार सहायक होती है। कारखाने के मालिक, मैनेजर आदि की गाड़ी खींचनेवाले कुत्ते अपने आपको वफादार साबित करने के लिए गाड़ी खींचते हैं। मजदूर हड़ताल, जुलूस, मोर्चाबंदी करते हैं, लेकिन खुद की नौकरी बचाने के लिए वफादार भी कई लोग बनते हैं। रीछों की तरह मजदूर गाड़ी का पीछा करते हैं, परंतु मालिक लोग गोली दागने पर अपने ही साथियों पर टूट पड़ते हैं। हमारा लक्ष्य गाड़ी है इसीलिए हमें गाड़ी में बैठे लोगों की तरफ ध्यान देना है।

अतः कह सकते हैं कि हमें अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए तथा उससे विचलित नहीं होना चाहिए। अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। हम अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें तो हमारी प्रगति में कोई रूकावट नहीं। उपर्युक्त लोककथा से लेखक ने इसी बात को स्पष्ट किया है।

3.10.2 महाभारत -

'प्याज के छिलके' कहानी में मुंशीजी का बेटा प्रदीप के हाथों हरिजन कैलशिया तथा लंगड़ की हत्या होती है। प्रदीप को बचाने के लिए सत्तावादी लोग एक-दूसरे से प्याज के छिलकों की तरह जुड़े हुए हैं। सत्तासीन दल के सासंद बाबू जगदंबा प्रसाद और सत्ताविहीन दल के नेता रामसकल सिंह प्याज को द्रौपदी की साड़ी की तरह मानते हैं, जो चाहे उतना खींचे पर वह खत्म नहीं होती। बाबू जगदंबा प्रसाद रामसकल सिंह से पूछते हैं- "काहे खामखाँ पड़े हो प्याज के पीछे ? म्या यह प्याज नहीं द्रौपदी की साड़ी है। साड़ी दुःशासन की तरह खींचते जाओ। नंगा नहीं कर पाओगे।"[1] लेकिन रामसकल सिंह आखिरी हद तक शोषण की द्रौपदी को नंगा करना है, ऐसा बाबू जगदंबा प्रसाद से कहते हैं। यह महाभारत का छोटासा वाक्या कथानक को अधिक रोचक बनाता है। सत्तावादी एवं सत्ताविहीन दल के लोग प्याज के छिलके की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो समाज का शोषण करते हैं। प्याज भी द्रौपदी की साड़ी की तरह ही है, जो चाहे जितना खींचे नंगा ही नहीं होता। हमारे समाज में शोषण, भ्रष्टाचारी की जड़ भी द्रौपदी की साड़ी की तरह है, जो कभी-भी खत्म नहीं होनेवाली है। हरिजन कैलशिया की मृत्यु का कारण प्याज है और प्याज के छिलके की तरह एक-दूसरे से जुड़े उच्च वर्ण, सत्तासीन दल तथा सरकारी अफसर जो हरिजन कैलशिया को न्याय नहीं दे पाता।

3.10.3 गीतासार -

'घर चलो दुलारीबाई' कहानी में पति तथा बच्चे के मृत्यु के बाद विधवा दुलारी पर मुश्ताक के साथ अवैध संबंध का झूठा इल्जाम लगाकर ससुरालवाले उसे घर से निकाल देते हैं। समाज एवं घर से बहिष्कृत दुलारी अपने अधिकार के लिए न्यायालय जाती है। सारे गवाह, सारे प्रमाण दुलारी के खिलाफ हैं, जो दुलारी को मृत घोषित करते हैं। मुश्ताक जज है, वह दुलारी को न्याय देना चाहता है, परंतु मिश्राजी उसके कान भरकर अपनी तरफ करता है। मिश्राजी मुश्ताक को गीता में क्या लिखा है यह बताते हैं- "ये लोग पहले से ही मरे हुए हैं, तुम तो मारने के एक निमित्त मात्र हो। तुम कौन हो मारनेवाले ? तुम नहीं तो कोई और ही मारेगा। यहाँ पाप-पुण्य कोई कुछ

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 10

नहीं करता, सब कराया जाता है। उसी से सब निकलता है, उसी में सब को समाहित होना है। इसलिए हे अर्जुन, तु युद्ध कर और कर्म करके निर्लिप्त हो जा।''[1] यहाँ स्पष्ट है कि मिश्राजी मुश्ताक को गीतासार का उपुर्यक्त पाठ पढ़ाकर, पैसे देकर दुलारी के खिलाफ न्याय दिलवाते हैं। सच्चाई के रास्ते जानेवाले मुश्ताक को गलत रास्ता मिश्राजी दिखलाते हैं। गीतासार का गलत अर्थ ग्रहण करके मुश्ताक दुलारी को न्याय नहीं दे पाता।

अतः स्पष्ट है कि चंद पैसों के लिए मुश्ताक विधवा दुलारी पर अन्याय करता है। मुश्ताक पढ़ा-लिखा एक जिम्मेदार नागरीक होकर भी लालचवश गैर जिम्मेदारी निभाता है। लोककथाओं का बुरा अर्थ ग्रहण करना अथवा देना यह समाज विघातक है। लोककथाओं से हमें अच्छे विचार ग्रहण करके समाज की भलाई सोचनी चाहिए तथा उससे हमें अच्छे संस्कार प्राप्त करने चाहिए। दलित दुलारी को उपर्युक्त पाठ के कारण न्याय नहीं मिलता। यहाँ पर संजीव जी ने लोककथा का अजब नमूना प्रस्तुत किया है।

3.10.4 'रामायण' -

'भूमिका' में गोराई, सावंत, पीटर, मन्नान, मरमू तथा 'मैं' सेठ से पैसे लेकर तथा उसके कहने पर गाँव में आग लगवाकर उसे उजाड़ देते हैं। इसी आग में बच्चों को बचाते वक्त एक औरत घायल एवं अंधी हो जाती है। इसी अंधेपन का फायदा जानी उठाता है और उसकी इज्जत लुटता है तथा उसे गोराई, सांवत मरमू आदि के पास बेचता है। इन लोगों को अंधी औरत की यह हालत देखकर अपने किए हुए अपराध पर शर्मिंदगी महसूस होती है और उस औरत से माफी भी माँगते हैं। वह औरत इन लोगों को रामायण के सबसे भयंकर पात्र के बारे में पूछती है। यह लोग रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण, विभीषण आदि लोगों के नाम बताते हैं, लेकिन वह औरत रामायण का सबसे भयंकर पात्र हनुमान बताती है। सब लोग आश्चर्य में पूछते हैं वो कैसे ? तब वह औरत कहती है- हनुमान के पास अकुत ताकत थी, लेकिन जिंदगीभर रामचंद्र की गुलामी करता रहा। श्रीराम के कहने पर मेघनाद और रावण के खिलाफ अपनी ताकत का इस्तेमाल किया। रावण और मेघनाद का कसूर सिर्फ यह था कि उन्होने हरामखोर और ऐय्याश देवताओं और उनके

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 19

पुरोहित ऋषियों को पकड़कर काम पर लगा दिया था। रावण के साथ दुश्मनी होकर लंका के साधारण लोगों को हनुमान की ताकत का शिकार होना पड़ा। हनुमान ने लंका में आग लगवाकर बेकसूर लोग, परिंदे और जानवर बच्चों तक मार दिया।

इस लोककथा के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि लोग अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल करके बेकसूरों को सजा देते हैं। हनुमान ने शूर-वीर होकर भी अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल किया है। गुंड़ों को यह कथानक सुनकर अपने किए हुए अपराध पर ग्लानी महसूस होती है।

यहाँ स्पष्ट है कि राजनीति के आश्रय में पलित यह गुंड़े आम जन-मानस पर अन्याय-अत्याचार करते हैं, समाज में दहशत फैलाते हैं, सिर्फ चंद रुपयों के लिए बेकसूर लोगों की जान लेते हैं। लेखक इस कहानी के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि हमें अपनी ताकत का इस्तेमाल देश तथा समाज की रक्षा के लिए करना चाहिए।

3.10.5 रानी सिनगी दई -

'दुनिया की सबसे हसीन औरत' में ओरॉव जन जाति की महिला मूलियों की गठरी लेकर रेल में चढ़ती है। टी. टी. साहिबा उस गरीब औरत के पास से मूलियों के पैसे भी माँगती है। दो पुलिस रेल में चढ़कर उस औरत की मुलियों के गठरी से मुफ्त में ही मूलियाँ उठाते हैं। दो शरीफजादी लड़कियाँ बिना टिकट रेल सफर कर रही हैं, वह लड़कियाँ मूली गिरने पर गालियाँ देती हैं, तो वह औरत रोने लगती है। महमूद उसी रेल में सफर कर रहा है, वह इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर उस औरत को उसके चेहरे पर जो तीन गोदने गुदवाए हैं उसका इतिहास बताता है।

सरहूल के पर्व में सारे मर्द हंडिया पीकर बेहोश हुए थे। तभी आज़ाद जातियों पर साम्राज्यवादियों ने हमला बोल दिया। रानी सिनगी दई ने महज औरतों की फौज लेकर, मर्दानी पोशाक पहनकर हमलावरों को हराया था। तीन हमलों में मुगलों को शिकस्त दी। गद्दार सुंदरी के चलते भेद खुल जाता है। चौथे हमलों में रानी किला छोड़ती है। तीन शिकस्त का बदला चेहरे पर तीन बार दाग कर लेना। इन दागों को कलंक न मानकर सिंगार के रूप में अपनाती है।

इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी संकट का मुकाबला बड़े धैर्य से करना चाहिए। रानी सिनगी दई और उनकी औरतों की फौज अगर अपने मर्द उठने की प्रतीक्षा करते तो उन्हें बहुत बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता। रानी सिनगी दई ने जिस प्रकार हमलावरों को शिकस्त दी उसी प्रकार हर औरत अपने ऊपर होते अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाए। महमूद इस ऐतिहासिक लोककथा के माध्यम से ओरॉव जनजाति की महिला को जुल्म के खिलाफ आवाज उठाकर बहादूर बनने के लिए कहता है। यह कथा सुनकर रेल के अन्य यात्रियों में भी जोश निर्माण होता है।

यहाँ स्पष्ट है कि लोककथा के माध्यम से हमें अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं। विवेच्य कहानियाँ मनोरंजन के साथ-साथ मनुष्य जीवन को कुछ-ना-कुछ संदेश देती हैं। कथानक के विचारों से लोककथाएँ सहायक होती हैं। जुल्म के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। लेखक ने जो लोककथाएँ प्रस्तुत की हैं, वह जीवन के यथार्थ को दर्शाती हैं। विवेच्य कहानियों में धार्मिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक लोककथाएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

3.11 लोकगीत -

लोकगीत को 'फोक टॉल' कहा जाता है। उत्सव, पर्व, तीज, त्यौहार आदि खुशियों के मौके पर लोकगीत गाए जाते हैं। पंजाब, गुजरात, बांगला, महाराष्ट्र आदि विविध प्रांतों में लोकगीतों का एक विशिष्ट स्थान है। शादी-ब्याह के वक्त, चैत आन्पर, देवीपूजन, विविध त्यौहारों पर लोकगीत गाए जाते हैं। लोकगीतों के रचयिता अज्ञात होते हैं। लोककथा की तरह लोकगीत भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं। संजीव की कहानियों में लोकगीतों का चित्रण कम मात्रा में प्राप्त होता है।

3.11.1 सपेरों का गीत -

'टीस' में शिबूकाका की जीवन व्यथा प्रस्तुत हुई है। सपेरे शिबूकाका का दर्द इस गीत के माध्यम से स्पष्ट हुआ है।

स्त्रियों का दल - ''गोलाप फूटिलो, चोंपा फूटिलो, मातिलो पोवोन।

किसेक गोंधो पेये मेते आछे तोमार मोन ?

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

पुरुषों का दल	-	हासना हेना आमार हे, सुधाय किसेक गोंधो हे।
		गोंधो सागरे भासछे जार जीवोनेर दिगोंतो हे।
		एकी कथा भेवे, केपे उठे आमार मोन।
		आधेक रातेर पोरेइ झोरे जासन जोमोन।
स्त्रियों का दल	-	फूटिलॉम कि झोरिलॉम, एइ जीवोन ई पाइलॉम।
		पीरिति अतो भालो नोय, तोमाके बुझाइलॉम।
		पीरिति पीरिति कोरे पागल होस ना रे मोन।
		नागफेनार सेज एटा टीसेई मोरोन।"[1]

इस गीत का अर्थ इस प्रकार है -

स्त्रियों का दल	-	गुलाब खिल गया है, चंपा खिल गई है। पवन मतवाला हो उठा है, मगर कौन-सी सुगंध पाकर तू मतवाला बन बैठा है ?
पुरुषों का दल	-	जिसके सुगंध सागर में मेरे जीवन के दिगन्त तैरने लगे हैं। मेरी वह रात की रानी पूछती है गंध किसकी है। एक ही बात सोचकर मन काँप उठता है। रह-रहकर आधी रात के बाद (रात रानी की तरह) झर तो नहीं जाओगी ?
स्त्रियों का दल	-	खिली की झरी - यही तो जिंदगी मिली है। इतनी प्रीति अच्छी नहीं है - तुम्हें मैं समझाये देती हूँ। प्रीति-प्रीति करके बावरे न बनो। यह तो नागफनी की सेज है, टीस टीस कर मरोगे।

यहाँ स्पष्ट है कि स्त्री-पुरुषों के दल ने जीवन के यथार्थ को स्पष्ट करने के लिए रातरानी को माध्यम बनाया है। जिस तरह रातरानी सिर्फ रात के वक्त अपनी सुगंध फैलाती है और आधी रात के बाद झर जाती है उसी प्रकार तुम भी झर जाओगी। ऐसा पुरुषों का दल कहता है, तब

---

1. संजीव - तीस साल का सफरनामा, पृष्ठ - 54

स्त्रियों का दल उतनी ही चतुराई से जवाब देती है। खिली नहीं की झर जाना यही तो जिंदगी है, यह बड़ा यथार्थपूर्ण स्पष्ट हुआ है।

3.11.2 आदिवासियों का गीत -

'आप यहाँ हैं' में हिंदीया आदिवासी सामूहिक नृत्य का गीत इस प्रकार गुनगुनाती है -

"स्वरग राज केतिक सुंदर हमार लगिन
सोना से सिगरैले, रूपा सजावारले
भूख नखे, पियास नखे, ओ हो रे ऽ ऽ ऽ....
जोर नखे, जुलूम नखे, लड़ाई नखे, झगड़ो नखे ओ हो रे ऽ ऽ ऽ"[1]

इस गीत के माध्यम से आदिवासी लोगों का प्यार से रहने का संदेश प्राप्त होता है। जुल्म, जबरदस्ती, भूख, प्यास आदि न होकर सिर्फ प्यार से रहने के लिए कहते हैं।

3.11.3 पचरा गीत -

'महामारी' में सुक्खू बहू तथा रंगई बहू माता की महामारी फैलने पर गाँव की औरतों समवेत देवी-पूजन का गीत गाते हुए चल पड़ती है। बड़के चौरे पर जल चढ़ाकर, अगियार करती है। इस देवीपूजन के गीत को 'पचरा' कहते हैं -

"निमिया की डारी देवी डारयी हिंडोलवा कि झूलि झूलि ना....।"[2]

यहाँ स्पष्ट है कि देहाती लोग देवी को संतुष्ट करने के लिए गीत गाते हैं। गाँव की औरतें आपस का बैर-भाव भूलकर पचरा गाने के लिए आती है। अतः हम कह सकते हैं कि गीत के कारण एकात्मता बढ़ती है।

3.11.4 बच्चों के लिए गीत -

'घर चलो दुलारी बाई' में सुखदेई बच्चों को खिलाते वक्त निम्नलिखित पंक्तियाँ गाती हैं -

---

1. संजीव - आप यहाँ हैं, पृष्ठ - 65
2. संजीव - भूमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ - 23

''ऊँची-ऊँची बखरी लुभाने भैय्या बिरनू,

भितरा की हलिया न जाने भैय्या बिरनू।''[1]

यहाँ स्पष्ट है कि बच्चों को खिलाते वक्त गीत गाते हैं ताकि बच्चे हँसते रहे। बच्चों को भी गीत बहुत पसंद रहते हैं। बच्चों को गीतों की जानकारी प्राप्त होती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित भी होती है।

3.11.5 चैत का गीत -

'तिरबेनी का तड़बन्ना' में परशूरामपुर में चैत आते ही सारा गाँव झूम उठता है। चैत के आते ही मौसम का मिजाज चढ़ता है। चैत में ही ताड़ी मिलती है, आम बौर-बौरकर झरझरा उठते हैं, महूआ चूने लगता है, कोयल की कुहू-कुहू आदि का चित्रण गीत में प्राप्त होता है। निसर्ग में जो सुहाना परिवर्तन हो रहा है उसे इस गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

''टिकोरे से लदी अमराइयों से कोयलो की आवाज आयी

कुहू - कुहू - कुहू !

गुच्छ-गुच्छ फूले झरते महुओं से आवाज आयी

कुहू - कुहू - कुहू !

तड़बन्ना के नये खिले कौंचों से आवाज आयी

कुहू - कुहू - कुहू !

इस गीत में चैत के मौसम का चित्रण लेखक ने बड़ी यथार्थता से स्पष्ट किया है। कोयलों की कुहू - कुहू मन को आल्हादीत करती है।

यहाँ स्पष्ट है कि लोकगीतों के माध्यम से मन के विचार स्पष्ट होते हैं। निसर्ग से परिचय, देवी पूजन का गीत, बच्चों का गीत तथा आदिवासियों के गीत हमें समाज के करीब ले जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि लेखक ने लोकगीतों के माध्यम से मनुष्य के भावों को स्पष्ट किया है, जो कथानक में आवश्यक लगता है।

---

1. संजीव - दुनिया की सबसे हसीन औरत, पृष्ठ - 12

निष्कर्ष -

दलित लोग अपना जीवनयापन परंपरागत ढंग से करते हैं। भौतिक सुख-सुविधा का अभाव, अर्थाभाव, व्यसनाधीनता, अशिक्षा अंधविश्वास आदि के कारण ये लोग अपना जीवन दुर्बलता एवं दरिद्रता से जीते हैं। इसी का चित्रण विवेच्य कहानियों में प्राप्त होता है। झुग्गी झोपड़ी, बजबजाती नाली, चारों ओर सड़ांध बू, गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़ा, तेल के खर्चे को बचाने के लिए औरतों का भी मूँड़न करना, मुहल्ला, बाड़ी, बस्ती में कुड़े-कचरे के मकान में रहनेवाले दलितों का जीवन अत्यंत दयनीय है। खाने के लिए चूनी-भूसी, मकई अथवा गोबरहा, बसी खाना, दूसरों के यहाँ की जूठन तथा माड़ एवं सत्तू का घोल पीकर अपना जीवन गुजारते हैं। 'मुर्दगाह' कहानी में इदरीस न बिकनेवाले बासी पकोड़े अपने बेटे गुलामनबी को खिलाता रहता है, जिसके कारण बच्चा मर जाता है। कुपोषित खाना खाने से दलितों का स्वास्थ्य मरियलसा दिखाई देता है। जी-तोड़ मेहनत करने पर भी इन्हें भरपेट भोजन प्राप्त नहीं होता। संजीव की कहानियों में इसी का चित्रण अंकित हुआ है।

दलित समाज में मौजूद व्यसनाधीनता का चित्रण विवेच्य कहानियों में प्राप्त होता है। कुछ लोग आदत से मजबूर, तो कुछ दुःख-दर्द कम करने के लिए, तो कुछ लोग मेहमान नवाजी के लिए व्यसनाधीन रहते हैं। सिगारेट, बीड़ी पीना, खैनी टोकना, पान खाना आदि व्यसनों के अधीन मनुष्य होता है। शराब पीकर सारे समाज में अशांति फैलाना यह पियक्कड़ों की आदत है। बड़ों का अनुसरण बच्चे करते हैं यह पिशाच में दृष्टिगोचर हुआ है। 'धनुष टंकार' तथा 'तिरबेनी का तड़बन्ना' में लोग ताड़ी-माड़ी ठर्रा पीकर गाली-गलौज करते दिखाई देते हैं। यहाँ संजीव ने व्यसनाधीनता पर सार्थकता से प्रकाश डाला है।

दलित वर्ग अपना परंपरागत व्यवसाय करते नजर आते हैं। 'जब नशा फटता है' में मेहतर समाज मैला ढोने का काम करते हैं। 'तीस साल का सफरनामा', 'घर चला दुलारीबाई, 'जसी बहू' तथा 'पिशाच' में वर्ण के अनुसार परंपरागत व्यवसाय करते हैं। 'मुर्दगाह' कहानी में 'मैं' के अब्बा तकियादारी करते हैं। मनोहर चाचा चमड़ा खरीदकर ढोल बनाके बेंचते हैं। 'फुटबॉल', 'चुनौती', 'धनुष-टंकार' तथा 'नेता' आदि कहानियों के मजदूर अपने बच्चों को

अपनी जगह नौकरी लगाने की इच्छा रखते हैं। आर्थिक स्थिति से दुर्बल दलित मजदूरी करके अपने परिवार का बोझ उठाते हैं। उच्च वर्ण अपनी सत्ता तथा धन के बल पर दलितों को मजदूरी कम देकर उनका जीवन नारकीय बनाता है।

वैज्ञानिक विचारों का अभाव तथा धार्मिक भय के कारण अंधविश्वास में वृद्धि होती है। धार्मिक रूढ़ि, परंपरा, देवताओं के प्रति निष्ठा के कारण लोग मन्नते माँगना तथा मंत्र-तंत्र में अधिक विश्वास रखते हैं। टोना-टोटका, भूत-प्रेतात्मा यह भी लोगों के जीवन से जुड़ा हुआ अंधविश्वास है। मन्नते माँगकर उसे पूरी करने के लिए खेत बंधक रखकर मन्नते पूरी करते हैं जिसका चित्रण 'महामारी' में दिखाई देता है। 'प्रेतमुक्ति', 'मैं चोर हूँ, मुझ पर थूको' तिरबेनी का तड़बन्ना' में भूत-पिशाच से डरते लोग चित्रित हुए हैं।

जाति भेदाभेद भारतीय समाज व्यवस्था पर काला धब्बा है। जातीयता के कारण दलितों को अनेक अत्याचार तथा यातनाएँ भूगतनी पड़ती हैं। उच्च वर्ण ने निम्न वर्ग पर अनेक सितम ढोए हैं। दलित भी इस नारकीय जीवन से मुक्ति पाने के लिए धर्मपरिवर्तन कर रहा है। समाज में छुआ-छूत तथा जाति भेदाभेद देहातों में अधिक दिखाई देता है। समाज के खिलाफ अथवा समाज के नीति-नियमों के विरूद्ध आचरण करनेवालों को समाज से बहिष्कृत किया जाता है। 'घर चलो दुलारी बाई' में दुलारी पर मुश्ताक के साथ अवैध संबंध का झूठा इल्जाम लगाकर परिवार के साथ-साथ समाज से बहिष्कृत करते हैं। 'भूखे रीछ' का रामलाल मुस्लिम रजिया से शादी करने पर उसे गाँव से बहिष्कृत होना पड़ता है। परंतु अपने अधिकारों के प्रति सजग दलित संगठित बनकर समूहभाव से इस अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाता है। अपने अस्तित्व के प्रति जागृत दलित आंबेडकरजी का 'संगठित बनो संघर्ष करो' इस नारे से चेतित संगठित होकर संघर्ष कर रहा है।

राजनीतिक स्थिति स्वार्थी एवं भ्रष्टाचारी रहने से दलित, आदिवासी अपने अधिकारों से वंचित रहा है। सरकारी सुख-सुविधा अपने समाज में बटोरते नेता वोट के लिए तथा कुर्सी के लिए दलितों को सहानुभूति दिखाता है। झूठे आश्वासन देकर लोगों को बहलाता-फुसलाता है। अछूतों के घर-खा-पीकर उसके फोटो छपवाते हैं ताकि चुनाव के वक़्त वोट पा सकें

जिसका चित्रण 'प्याज के छिलके' में प्राप्त होता है। 'नेता' में झूठे आश्वासन देते मंत्री तथा 'चुतिया बना रहे हो' में अपनी जाति का मंत्री बने इसलिए सिंह जाति की सभा लेना, 'तिरबेनी का तड़बन्ना' में अपने स्वार्थ के लिए दलितों की पारटी बनाना आदि का चित्रण संजीव की कहानियों में यथार्थता से दिखाई देता है।

लोककथा और लोकगीत का आधार लेकर कथाकार ने कथावस्तु का विस्तार किया है। भूखे रीछ, द्रौपदी वस्त्राहरण, गीतासार, रामायण, रानी सिनगी दई आदि लोककथा के माध्यम से लेखक ने अच्छे तथा गलत संस्कार लोग किस प्रकार आत्मसात करते हैं तथा हमारे जीवन में प्रेरणा किस प्रकार प्रदान करते हैं इसको भी दर्शाया है। लोकगीतों से भी लेखक ने परिचय कराया है। अतः हम कह सकते हैं कि विवेच्य कहानियाँ दलित जीवन को यथार्थता से प्रस्तुत करती हैं। दलित जीवन में स्थित दयनीयता का वास्तविक चित्रण संजीव की कहानियों में प्राप्त होता है।